Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ-اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ○

(सूरतुल बक़रा आयत :111)

अनुवाद: नमाज़ को क़ायम करो और ज़कात अदा करो और जो भलाई भी तुम अपने लिए आगे भेजते हो उसे तुम अल्लाह के पास मौजूद पाओगे। निस्संदेह अल्लाह तआला उस पर नज़र रखे हुए है जो तुम करते हो।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّةٌ

वर्ष 3

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 10

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

8 मार्च 2018 ई. 19 जमादी उस्सानी 1439 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

मैं अपनी चमकार दिखलाऊंगा अपनी क़ुदरत दिखाकर तुझको उठाउंगा, दुनिया में एक नज़ीर (सचेत करने वाला) आया पर दुनिया ने उसे स्वीकार न किया लेकिन ख़ुदा उसे स्वीकार करेगा और बड़े ज़ोरदार हमलों से उसकी सच्चाई प्रकट कर देगा, ख़ुदा ने केवल अपनी क़ुदरत दिखा कर इस जमाअत को स्थापित कर दिया है वरना बावजूद इतने क़ौमी विरोध के यह बात असंभव थी

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

111- निशान- बराहीन अहमदिया में एक भविष्यवाणी है- मैं अपनी चमकार दिखलाऊंगा अपनी कुदरत दिखाकर तुझको उठाऊंगा। दुनिया में एक डराने वाला आया पर दुनिया ने उसको स्वीकार ना किया लेकिन ख़ुदा उसे स्वीकार करेगा और बड़े जोरदार हमलों से उसकी सच्चाई प्रकट कर देगा।इस भविष्यवाणी पर 25 वर्ष गुज़र गए। यह उस जमाने की है जबकि मैं कुछ भी नहीं था, इस भविष्यवाणी का तात्पर्य यह है कि बावजूद सख्त मुखालिफत बाहरी और अंदरूनी के कोई जाहिरी उम्मीद नहीं होगी कि यह सिलसिला स्थापित हो सके लेकिन ख़ुदा अपने चमकदार निशानों से दुनिया को इस तरफ खींच लेगा और मेरी सच्चाई के लिए ज़ोरदार हमले दिखाएगा। अत: इन्हीं हमलों में से एक ताऊन (प्लेग) है जिसकी एक लंबे समय पहले खबर दी गई थी और उन्हीं हमलों में भूकंप हैं जो दुनिया में आ रहे हैं और न जाने और क्या-क्या हमले होंगे और इसमें क्या संदेह है कि जैसा कि इस भविष्यवाणी में बयान फरमाया है ख़ुदा ने केवल अपनी कुदरत दिखाने से इस जमाअत को कायम कर दिया है वरना बावजूद इस क़ौमी मुखालिफत के यह बात असंभव थी कि इतनी जल्दी कई लाख इंसान मेरे साथ हो जाएँ और विरोधियों ने बहुत कोशिश की मगर ख़ुदा तआला के इरादे के मुकाबले पर कुछ न कर सके।

112-निशान- हमारा एक मुकद्दमा तहसील बटाला जिला गुरदासपुर में कुछ विरासती सम्बन्धियों के साथ था। मुझे स्वप्न में बताया गया कि इस मुकद्दमा में डिग्री होगी। मैंने कई लोगों के आगे वह स्वप्न सुनाया। उनमें से एक हिंदू भी था जो मेरे पास आता जाता रहता था उसका नाम शर्मपथ है जो जिंदा मौजूद है उसके समक्ष भी मैंने यह भविष्यवाणी वर्णन कर दी थी कि मुकद्दमा में हमारी जीत होगी। बाद इसके ऐसा संयोग हुआ कि जिस जोर से इस मुकद्दमा का आखरी हुक्म सुनाया गया हमारी तरफ से कोई व्यक्ति उपस्थित ना हुआ और विपक्षी जो संभवत 15 या 16 आदमी थे, हाजिर हुए असर के समय (तीसरे पहर) उन सब ने वापस आकर बाजार में वर्णन किया कि मुकदमा खारिज हो गया। तब वही व्यक्ति मस्जिद में मेरे पास दौड़ता हुआ आया और ताना देकर कहा कि लो साहब आप का मुकदमा खारिज हो गया। मैंने कहा कि किसने बताया। उसने उत्तर दिया कि सब मुद्दआ अलैह आ गए हैं और बाजार में वर्णन कर रहे हैं। यह सुनते ही मैं हैरत में पड़ गया क्योंकि खबर देने वाले 15 आदमी से कम न थे और कुछ उनमें से मुसलमान और कुछ हिंदू भी थे। तब जो मुझको फिक्र और गम हुआ उसको मैं वर्णन नहीं कर सकता वह हिंदू तो यह बात कह कर खुश-खुश बाजार की तरफ चला गया, मानो इस्लाम पर हमला करने का एक मौका उसको मिल गया। मगर जो कुछ मेरा हाल हुआ उसका वर्णन करना शक्ति से बाहर है। असर (तीसरे पहर) का समय था मैं मस्जिद के एक कोने में बैठ गया और दिल बहुत परेशान था कि अब यह हिंदू हमेशा के लिए यह कहता रहेगा कि कितने दावे से डिग्री होने की भविष्यवाणी की थी और वह झूठी निकली। इतने में परोक्ष से एक आवाज गूंज कर आई और आवाज इतनी तेज थी कि मैंने ख्याल किया कि बाहर से किसी आदमी ने आवाज दी है। आवाज़ के यह शब्द थे कि डिग्री हो गई है, मुसलमान है, अर्थात क्या तू विश्वास नहीं करता। तब मैंने उठकर मस्जिद के चारो तरफ देखा तो कोई आदमी नहीं पाया। तब विश्वास हो गया कि फरिश्ते की आवाज है मैंने उस हिंदू को भी उसी समय बुलाया और फरिश्ते की आवाज से उसको जानकारी दी मगर उसको विश्वास ना हुआ। सुबह मैं स्वयं बटाले की तहसील में गया और तहसीलदार हाफिज़ हिदायत अली नाम एक व्यक्ति था वह उस समय तहसील में नहीं आया था। उसका मिस्ल पढ़ने वाला मथुरादास नाम एक हिंदू मौजूद था। मैंने उससे पूछा कि क्या हमारा मुकदमा खारिज हो गया? उसने कहा कि नहीं बल्कि डिग्री हो गई। मैंने कहा कि विपक्षी दल ने कादियान में जा कर यह प्रसिद्ध कर दिया है कि मुकदमा खारिज हो गया है। उसने कहा कि एक तौर से उन्होंने भी सच कहा है, बात यह है कि जब तहसीलदार फैसला लिख रहा था तो मैं एक ज़रूरी काम के लिए उसकी पेशी से उठ कर चला गया था। तहसीलदार नया था उसको मुकद्दमा की पृष्ठभूमि का पता ना था, विपक्षी दल ने एक फैसला उसके सामने प्रस्तुत कर दिया जिसमें विरासत वाली आसामियों को मालिक की अनुमति के बिना अपने खेतों से वृक्ष काटने का अधिकार दिया गया था। तहसीलदार ने इस फैसले को देखकर मुकदमा खारिज कर दिया और उनको विदा कर दिया। जब मैं आया तो तहसीलदार ने वह फैसला मुझे दिया के मिस्ल में शामिल करो। जब मैंने उसको पढ़ा तो मैंने तहसीलदार को कहा कि यह तो आपने बड़ी भारी गलती की क्योंकि जिस फैसला की बुनियाद पर आपने यह हुकुम लिखा है वह तो अपील के महकमा से रद्द हो चुका है मुद्दआ अलैहि ने शरारत से आपको धोखा दिया है और मैंने उसी समय महकमा अपील का फैसला जो मिस्ल से शामिल था उनको दिखला दिया तब तहसीलदार ने अविलंब अपना पहला फैसला फाड़ दिया और डिग्री कर दी। यह एक भविष्यवाणी है कि एक हिंदुओं का समूह और कई मुसलमान उसके गवाह हैं और वही शर्मपथ उसका गवाह है जो बहुत खुशी से यह खबर लेकर मेरे पास आया था कि मुकदमा खारिज हो गया अल्हम्दुलिल्लाह अल ज़ालिक। ख़ुदा के काम अजीब कुदरत से प्रकट होते हैं। इस भविष्यवाणी की तमाम अहमियत इससे पैदा हुई है कि हमारी ओर से

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

कोई हाज़िर न हुआ और तहसीलदार ने गलत फैसला विपक्षी दल को सुना दिया। वास्तव में यह सब कुछ ख़ुदा ने किया अगर ऐसा ना होता तो यह विशेष महानता और महत्त्व भविष्यवाणी में हरगिज़ पैदा ना होता।

113-निशान- बराहीन अहमदिया की यह भविष्यवाणी है कि شَاتَانِ تُذْبَحَانِ وَكُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ अर्थात दो बकरियां ज़िबह की जाएंगी और हर एक जो ज़मीन में पर है अंतत: मारेगा। यह भविष्यवाणी बराहीन अहमदिया में लिखी हुई है जो आज से 25 वर्ष पूर्व प्रकाशित हो चुकी है। मुझे लंबे समय तक उसके अर्थ मालूम ना हुए बल्कि और और जगह को केवल अनुमान से उसका पात्र ठहराया, लेकिन जब मौलवी साहिबज़ादा अब्दुल लतीफ मरहूम और शेख़ अब्दुर रहमान उनके परम शिष्य अमीर काबुल के अत्याचार से कत्ल किए गए तब प्रकाशमान दिन के समान स्पष्ट हो गया कि इस भविष्यवाणी के पात्र यही दोनों बुज़ुर्ग हैं क्योंकि شَاة (शातुं) का शब्द नबियों की पुस्तकों में केवल नेक इंसान पर बोला जाता है और हमारी तमाम जमाअत में अभी तक सिवाय इन दो बुज़ुर्गों के कोई शहीद नहीं हुआ और जो लोग हमारी जमाअत से बाहर और धर्म और ईमानदारी से वंचित हैं उन पर شَاة (शातुं) का शब्द चरितार्थ नहीं हो सकता और फिर इस पर और इस पर प्रसंग यह है किस इल्हाम के साथ यह दूसरा वाक्य है कि لَا تَهِنُوا وَلَا تَحْزَنُوا (निराश मत हो और न ग़म करो) जिससे सिद्ध होता है कि ऐसी मौतें होंगी जो हमारे ग़म का कारण होंगी और स्पष्ट है शत्रु की मौत से कोई गम नहीं हो सकता और जब साहिबजादा मौलवी अब्दुल लतीफ शहीद इसी जगह कादियान में थे उस समय भी उनके बारे में इल्हाम हुआ था قُتِلَ خَيْبَةً وَزِيدَ هَيْبَةً अर्थात विरोधियों से न उम्मीद होने की हालत में कत्ल किया जाएगा और उसका मारा जाना बहुत भयानक होगा।

(हक़ीक़तुल वह्यी, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 22, पृष्ठ 272)

☆ ☆ ☆

ऑफिस से बाहर जमाअती कामों के अतिरिक्त मुबल्लिगों को दिनभर अपने ऑफिस में ही रहना चाहिए। यह बात स्थानीय अहमदियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है कि वे अपने मबल्लिगों से किसी समय भी मिल सकें। आपको कभी भी समय व्यर्थ नहीं करना चाहिए। अपने ज्ञान को बढ़ाएं विशेष रुप से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तफ़्सीर पढ़ें और फिर दोबारा पढ़ें और नियमित रूप से एसेंस ऑफ इस्लाम का अध्ययन करें। जो भी यह समझता है कि जामिया से निकलने के बाद वह विद्वान हो चुका है वह गलती पर है। अल्लाह तआला आपके हर क़दम और हर काम को देख रहा है। अत: अपनी ज़िम्मेदारियों को ईमानदारी और दियानतदारी के साथ निभाने की कोशिश करते रहें।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के जमाअती मुबल्लिगों को महत्वपूर्ण उपदेश

(मुकर्रम आबिद वहीद खान साहिब की डायरी में से एक संक्षिप्त चयन)

अनुवादक: फरहत अहमद आचार्य

अमेरिका से संबंध रखने वाले नौजवान मुबल्लिगों पर आधारित एक प्रतिनिधिमंडल की हुज़ूर अनवर के साथ मीटिंग

21 अगस्त 2016 ई को अमेरिका से संबंध रखने वाले नौजवान मुबल्लिगों पर आधारित एक प्रतिनिधिमंडल की हुज़ूर अनवर से मुलाकात हुई। यह समस्त मबल्लिग जामिया अहमदिया केनडा से पास होकर आए थे और उन्हें हिदायत थी कि वह इस साल जलसा सालाना UK के लिए आएँ।

मीटिंग के दौरान मैंने देखा कि हुज़ूर अनवर मुबल्लिगों से कितना प्यार करते हैं। हुज़ूर अनवर ने उन्हें एक घंटा से अधिक समय दिया था ताकि जो भी प्रश्न उनके दिमागों में हैं, कोई भी समस्याएं हैं या कोई भी परेशानी उन्हें है, वह इस बारे में हुज़ूर से खुलकर बात कर सकें। हुज़ूर अनवर ने उनका मार्गदर्शन किया और उन्हें हिदायतों से नवाज़ा कि उन्हें किस तरह अपने कामों को पूर्ण करना चाहिए।

नमाज़ के हवाले से हिदायत देते हुए हुज़ूर अनवर ने फरमाया आपको चाहिए कि जमाअत के समस्त लोगों को हिदायत करें कि वे नमाज़-ए-फजर मस्जिद में अदा करें। विशेष तौर पर उन लोगों को जो मस्जिद के निकट रहते हैं। आपको देखना चाहिए कि किन-किन लोगों के पास गाड़ियों में जगह है और उनमें से कौन दूसरों को नमाज़ पर ले जा सकते हैं। एक और मुबल्लिग को हुज़ूर अनवर ने फरमाया अगर कोई भी व्यक्ति फजर की नमाज़ के लिए मस्जिद में नहीं आता फिर भी आप मस्जिद जाएं और मस्जिद के दरवाजे खोलें और अपनी नमाज़ मस्जिद में ही अदा करें। आपको निश्चित तौर पर दूसरों के लिए नमूना बनना चाहिए। हुज़ूर अनवर ने इस बात की अहमियत भी स्पष्ट कर दी के ऑफिस से बाहर जमाअती कामों के अतिरिक्त मुबल्लिगों को दिनभर अपने ऑफिस में ही रहना चाहिए। हुज़ूर ने फरमाया कि यह बात स्थानीय अहमदियों के लिए बहुत अहमियत रखती है कि वह अपने मुबल्लिगों से किसी समय भी मिल सकें।

मुबल्लिगों को सामान्य हिदायत देते हुए हुज़ूर ने फरमाया- आप को कम से कम 3 महीने पहले अपने कामों को निश्चित रूप देना चाहिए और उन जमाअतों को बार-बार नोटिस देना चाहिए जिनका आपने विज़िट करना है ताकि वह भी सही मंसूबा बंदी के साथ आयोजनों की तैयारी कर सकें जिसका अंतत: उन्हीं को लाभ होगा। आपको इसलिए जमाअतों में नहीं भेजा जाता कि आप स्थानीय जमाअतों में बिना बताए जायज़ा लेने के लिए जाएं बल्कि आपको उनकी तरबियत (प्रशिक्षण) के लिए उनके मार्गदर्शन के लिए और उनकी सहायता के लिए वहां भेजा जाता है।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया- मुबल्लिग होने की हैसियत से आपको कभी भी समय व्यर्थ नहीं करना चाहिए। इसके विपरीत अगर आपके पास समय है तो उसे किसी तामीरी काम के लिए खर्च करना चाहिए। कुछ पढ़ें और अपने ज्ञान में वृद्धि करें विशेष तौर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तफ़्सीर पढ़ें और फिर दोबारा पढ़ें और नियमित रूप से एसेंस ऑफ इस्लाम का अध्ययन करें। व्यक्तिगत अध्ययन के बिना आप वह बातें भी भूल जाएंगे जो आप को पहले से ही पता हैं। जो भी यह समझता है कि जामिया से पास होने के बाद वह विद्वान हो चुका है वह गलत ही पर है।

एक मुबल्लिग ने हुज़ूर अनवर से निवेदन किया कि जामिया अहमदिया बर्तानिया के विद्यार्थी और पास होने वाले मुबल्लिगों का हुज़ूर अनवर से एक खास ताल्लुक है और उन्होंने दूसरे देशों से पास होने वाले मुबल्लिगों की अपेक्षा हुज़ूर अनवर से अधिक और नियमित रूप से मुलाकात करने का सौभाग्य प्राप्त किया है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया इस कमरे में भी कुछ जामिया अहमदिया कैनेडा से पास होने वाले बैठे हैं जिन से मेरा विशेष संबंध है। आप में से कुछ नियमित रूप से मुझे व्यक्तिगत तौर पर लिखते हैं मगर आप

पृष्ठ 9 पर शेष

ख़ुत्बः जुमअः

सूरतुल मोमिन की प्रारंभिक चार आयतें और आयतल कुर्सी की सुबह एवं शाम तिलावत करने वालों के लिए आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस खुशख़बरी का वर्णन कि ऐसा व्यक्ति अल्लाह तआला की सुरक्षा में रहेगा

क़ुरआन और हदीस और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों की रौशनी में इन आयतों की मारिफत से भरी हुई तफसीर और उसकी रौशनी में जमाअत के लोगों को अत्यंत महत्वपूर्ण उपदेश

जब इन आयतों के पढ़ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तो केवल पढ़ने से कुछ नहीं होगा बल्कि व्यावहारिक हालत भी बेहतर करनी होगी

इन आयतों में वर्णित अल्लाह तआला की सिफात के विषयों का मोहक वर्णन और अल्लाह तआला की इन सिफात के फैज़ को प्राप्त करने के लिए मार्गदर्शन

तौबा व इस्तिग्फार और शिफ़ाअत के विषय की वास्तविकता का विवेकसम्मत वर्णन

इन आयतों का केवल पढ़ना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि उसके विषय पर विचार करते हुए उन बातों को अपनाने की आवश्यकता है और समझ पैदा करने की आवश्यकता है। जो इन आयतों के बारे में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया। क़ुरआन करीम ने उसकी व्याख्या कई जगह पर की है और फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उसको खोल कर हमारे सामने रखा। अगर यह बातें होंगी तो फिर इंसान ख़ुदा तआला के फजल से उसकी सुरक्षा में रहेगा। अल्लाह तआला हमें उसके अनुसार अपने जीवन व्यतीत करने का सामर्थ्य प्रदान करे।

मुकर्रमा आबिदा बेगम साहिबा, पत्नी मुकर्रम प्रफेसर अब्दुल कादिर डाहरी साहिब आफ नवाबशाह (पाकिस्तान) की वफात, मरहूमा का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 02 फरवरी 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ
اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔
غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

حٰمٓ ○ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ○ غَافِرِ الذَّنْۢبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ
شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِي الطَّوْلِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ۔ ○ (अल्मोमिन: 2-4)

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ۭ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۭ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ
وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖٓ اِلَّا بِمَا شَاۗءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا يَـــُٔـوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ

(अल्बक़रा: 256)

फरमाया- इन आयतों का अनुवाद है कि अल्लाह के नाम के साथ जो बड़ा रहम करने वाला, बिन मांगे देने वाला तथा बार बार रहम करने वाला है। हमीद है, मजीद है। इस किताब का उतारा जाना अल्लाह सम्पूर्ण प्रभुत्व वाले की ओर से है जो पापों को क्षमा करने वाला तथा तौबा को कबूल करने वाला है। पकड़ में बड़ा कठोर और बड़ा प्रदान करने वाला तथा बड़ा उपकारी है। उसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं, उसी की ओर लौट कर जाना है।

दूसरी आयत आयतुलकुर्सी है, जिसका अनुवाद है कि अल्लाह, उसके अतिरिक्त कोई अन्य उपास्य नहीं, सदैव जीवित रहने वाला तथा व्यापक है उसे न तो ऊँघ पकड़ती है न ही नींद, उसी के लिए है जो कुछ आसमानों में है और जो ज़मीन में है। कौन है जो उसके समक्ष सिफारिश कर सके किन्तु उसकी अनुमति से, वह जानता है जो कुछ उनके सामने है और जो उनके पीछे है तथा वे उसके ज्ञान को नहीं जान सकते किन्तु जितना वह चाहे। उसका राज्य आकाशों और धरती पर फैला है। इन दोनों की रक्षा उसे थकाती नहीं और वह बड़ी शान वाला तथा महिमा वाला है। ये आयात सूरतु मोमिन की पहली चार आयात हैं। ये बिस्मिल्लाह समेत चार आयात हैं और एक आयत जैसा कि मैंने कहा आयतुल कुर्सी है जो सूरतुल बक़रा की आयत है।

इन आयतों में अल्लाह तआला की कुछ विशेषताओं का वर्णन किया गया है तथा उसकी महिमा एवं महानता बयान की गई है। इन आयतों के महत्त्व के विषय में हदीसों में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का निर्देश मिलता है। हज़रत अबू हुरैरा रज़ीयल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जिसने प्रात: काल 'हामीम' से लेकर 'इलैहिल मसीर' तक पढ़ा तथा आयतुल कुर्सी भी पढ़ी तो इन दोनों के द्वारा सायँ काल तक उसकी रक्षा की जाएगी और जिसने ये दोनों शाम के समय पढ़ी तो इनके द्वारा सुबह तक उसकी रक्षा की जाएगी।
(सुनन तिरमिज़ी अबवाब फज़ाइलुल क़ुरआन, बाब मा जाअ फी सूरतिल बक़राव आयतुल कुर्सी हदीस 2879)

'हामीम' सूर: मोमिन की दूसरी आयत है। पहली बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम है। रहमान और रहीम की अनुवाद से व्याख्या हो गई। फिर हा मीम है जो

हरू'फ-ए-मु'कत्तआत हैं। ये जो फरमाया 'हामीम' ये हमीद और मजीद के शब्द हैं। हमीद का अर्थ है, वह जो प्रशंसा योग्य है तथा वास्तविक प्रशंसा उसी के लिए है अर्थात ख़ुदा तआला ही है जो प्रशंसा का अधिकारी है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हम्द के शब्द की व्याख्या करते हुए फरमाते हैं कि स्पष्ट हो कि हम्द उस प्रशंसा को कहते हैं जो किसी प्रशंसनीय के अच्छे काम पर की जाए तथा हेसे पुरस्कार देने वाले की प्रशंसा का नाम है जिसने अपने निश्चय से इनाम दिया हो तथा अपने सामर्थ्य के आधार पर उपकार किया हो तथा हम्द की वास्तविकता केवल उस अस्तित्व के लिए प्रमाणित होती है जो समस्त उपकारों एवं कृपाओं का स्रोत हो तथा अपने सामर्थ्य से किसी पर उपकार करे, न कि अनभिज्ञता के साथ अथवा किसी विवशता के कारण। और हम्द का यह अर्थ केवल ख़ुदाए खबीर व बसीर (सब कुछ जानने वाला तथा समझने वाला) की ज़ात में ही पाए जाते हैं और वही वास्तविक उपकारी है तथा अव्वल व अंत में सारे उपकार उसी की ओर से हैं तथा सारी प्रशंसाएँ उसी के लिए हैं, इस संसार में भी और उस संसार में भी तथा प्रत्येक प्रशंसा जो अन्य चीज़ों के विषय में की जाए उसका स्रोत भी वही है।

(उद्धृत एजाज़ुल मसीह अनुवादित, पृष्ठ 97 प्रकाशित नज़ारत इशाअत रब्वा)

अर्थात यदि किसी ग़ैर के बारे में हम्द (प्रशंसा) की जाती है तो वह जो दूसरों को प्रशंसा के योग्य बनाया है या इस योग्य बनाया है कि उन्होंने कोई ऐसा काम किया जिसकी प्रशंसा की जाए तो वह भी अल्लाह तआला का ही फैज़ है , अल्लाह तआला ही ने उन्हेंम ऐसी तौफ़ीक़ दी कि वे ऐसा काम करें जिससे उनकी प्रशंसा हो।

हम्द के शब्द की अधिक व्याख्या करते हुए आप ने फ़रमाया:- हम्द उस प्रशंसा को कहते हैं जो किसी शक्तिशाली शरीफ हस्ती के अच्छे कामों पर उसके सम्मान के इरादे से ज़बान से की जाए और सर्वोत्तम हम्द अल्लाह तआला से ही सम्बद्ध है। और हर प्रकार की हम्द का केंद्र चाहे वह थोड़ी हो या अधिक हमारा वह रब्ब है जो गुमराहों को हिदायत देने वाला और शरीफ लोगों को सम्मान प्रदान करने वाला है।

(करामातुस्सादिकीन अनुवादित पृष्ठ 133 प्रकाशित नज़ारत इशाअत रब्वा)

अर्थात वे हस्तियाँ जो प्रशंसनीय हैं वे सब उसकी हम्द (प्रशंसा) में लगी हुई हैं। फिर आपने इसी शब्द हम्द की व्याख्या करते हुए अधिक फ़रमाया- "हम्द के शब्द में एक अन्य संकेत भी है और वह यह है कि अल्लाह तबारक व तआला फरमाता है कि हे मेरे बन्दो, मेरी विशेषताओं के माध्यम से मुझे पहचानो तथा मेरे कमालात से मुझे पहचानो। मैं कमज़ोर हस्तियों के जैसा नहीं बल्कि मेरी हम्द का मुक़ाम अत्यंत बढ़ा चढ़ा कर हम्द करने वालों से भी बढ़ कर है और तुम आसमानों और ज़मीन में कोई प्रशंसनीय सिफात नहीं पाओगे जो तुम्हें मेरे अन्दर न मिल सकें। और ताहि तुम मेरी प्रशंसनीय सिफात की गणना करना चाहो तो तुम कदापि उन्हें नहीं गिन सकोगे यद्यपि तुम कितना ही जान तोड़ कर सोचो और अपने काम में डूब जाने वालों की भांति उन सिफात के बारे में कितना ही कष्ट उठाओ। ख़ूब विचार करो क्या तुम्हें कोई ऐसी हम्द नज़र आती है जो मेरे अन्दर न पाई जाती हो? क्या तुम्हें ऐसे कमाल का सुराग़ मिलता है जो मुझसे और मेरी बारगाह से दूर हो? और अगर तुम ऐसा अनुमान करते हो तो तुमने मुझे पहचाना ही नहीं और तुम अंधों में से हो (अत: हर हम्द अल्लाह ही को शोभा देती है) फ़रमाया बल्कि निस्संदेह मैं (अल्लाह तआला) प्रशंसनीय सिफात और अपने कमालात से पहचाना जाता हूँ और मेरी मूसलाधार बारिश का पता मेरी मेरी बरकात के बादलों से होता है। अत: जिन लोगों ने मुझे समस्त पूर्ण विशेषताओं का सूत्रधार विश्वास किया तथा उन्होंने जहाँ जो कमाल भी देखा तथा अपने विचारों की उच्चतम उड़ान तक उन्हें जो प्रताप भी दिखाई दिया, उन्होंने उसे मेरे ही माध्यम के साथ जोड़ा। और प्रत्येक बड़ाई जो उनकी बुद्धि और नज़रों में विशेष हुई और हर कुदरत जो उनकी फिकरों के दर्पण में उन्हें दिखाई दी उन्होंने उसे मेरी ओर ही सम्बद्ध किया। अत: ये हेसे लोग हैं जो मेरी निकटता की राहों पर चल रहे हैं, सत्य उनके साथ है तथा वे सफल होने वाले हैं। फरमाया- अत: अल्लाह तआला तुम्हें सुरक्षित रखे, उठो ख़ुदाए ज़ुलजलाल की विशेषताओं की खोज में लग जाओ तथा विद्वानों और विचार करने वालों की भांति उनमें सोच विचार अर्थात गहरी नज़र से काम लो। क्यूँकि हम्द की विशेषता का आभास होने से ही शेष अन्य विशेषताओं का ज्ञान हो जाता है या हो सकता है। फरमाया- अच्छी तरह देख भाल करो तथा कमाल (अति उत्तम) की प्रत्येक बात पर गहरी नज़र डालो और इस संसार के प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष में तथा उसे उसी प्रकार तलाश करो जैसे एक स्वार्थी इंसान बड़ी रूचि से अपनी अभिलाषाओं की खोज में लगा रहता है।" (अल्लाह तआला के फज्लों को जानने के लिए उसकी सिफात को जानने के लिए, उसकी हम्द करने के लिए, रास्ते तलाश करने के लिए बड़ी कोशिश करो। एक हरीस (लालची) इंसान की भान्ति प्रयत्न करो) फरमाया- अत: जब तुम उस पूर्ण कमाल तक पहुंच जाओ तथा उसकी सुगन्ध पा लो तो मानो तुमने उसी को पा लिया और यह ऐसा भेद है जो केवल हिदायत के चाहने वालों पर ही खुलता है। अत: यह तुम्हारा रब्ब और तुम्हारा आक़ा है जो खुद पूर्ण है और समस्त पूर्ण सिफात का प्रशंसाओं का केंद्र है।

(उद्धृत करामातुस्सादिकीन अनुवादित पृष्ठ 135-137 प्रकाशित नज़ारत इशाअत रब्वा)

समस्त हम्दें, समस्त प्रशंसाएं या प्रशंसा के योग्य चीज़ें उसी में एकत्र हैं। अत: अल्लाह तआला के प्रशंसनीय होने का ज्ञान जो हमें प्राप्त होना चाहिए ताकि अल्लाह तआला की अन्य विशेषताओं को भी हम पहचान सकें।

फिर अल्लाह तआला फरमाता है कि वह मजीद है, उच्चतम है, बुज़ुर्गी वाला है। इसका अर्थ यह है कि बड़ा ही प्रशंसनीय है तथा महामान्य शान वाला है जिस के स्तर तक कोई नहीं पहुंच सकता, वह जिसकी कृपाओं का कोई अन्त नहीं, जो देता है और देता चला जाता है, कभी नहीं थकता। अत: आयत पढ़ते हुए अल्लाह तआला के उच्चतम होने का यह अर्थ सामने होना चाहिए। पहले हम्द का अर्थ फिर उसके मजीद होने का अर्थ।

फिर फरमाया कि वह अज़ीज़ है अर्थात समस्त शक्तियों का स्वामी है, सारी शक्तियों से अधिक शक्ति शाली है तथा वह परास्त होने में अक्षम है उसे परास्त करना सम्भव नहीं है। सारे सम्मान उसी के लिए हैं तथा उसकी महानता को गिना नहीं जा सकता, वह प्रत्येक वस्तु पर प्रभुत्व रखता है, उसके जैसा कोई हो ही नहीं सकता, यह है अज़ीज़ का अर्थ।

फिर फरमाया कि वह अलीम है अर्थात वह प्रत्येक चीज़ का ज्ञान रखने वाला है। उस बात का भी जो हो चुकी है तथा उस बात का भी जो भविष्य में होने वाली है। जिससे कोई चीज़ छुपी नहीं है, जिसका ज्ञान सम्पूर्ण रूप से प्रत्येक चीज़ पर वर्चस्व रखता है। अत: यह वह ख़ुदा है जिसने यह किताब उतारी अर्थात क़ुर्आन-ए-करीम तथा जिसने यह अन्तिम शरीअत उतारी है। उसने प्रत्येक युग की आवश्यकतानुसार ज्ञान को इसमें रख दिया है तथा अब हर प्रकार की सुरक्षा तथा गलब: उसके अनुसार वास्तविक रंग में अमल करने से होगा और हो सकता है।

फिर फरमाया- वह गाफिरुज्ज़म्ब है, गुनाहों को क्षमा करने वाला है। अत: उसके आगे झुकते हुए पापों की क्षमा मांगनी चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इसको अनेक स्थानों पर स्पष्ट किया है कि अपने पापों की सदैव क्षमा मांगते रहना चाहिए। आपने एक बार फरमाया कि इंसान को जो प्रकाश प्रदान किया जाता है वह अस्थाई होता है अर्थात कोई भी दीन की अथवा आध्यात्मिकता की रौशनी प्रदान होती है तो वह अस्थाई होती है। उसे सदैव अपने साथ रखने के लिए इस्तिगफार की आवश्यकता होती है। फरमाया कि इस्तिगफार का यही अर्थ होता है कि मौजूदा नूर जो ख़ुदा तआला की ओर से प्रदान किया गया है वह सुरक्षित रहे तथा और अधिक मिले। इसकी प्राप्ति के लिए पाँच समय की नमाज़ भी है क्षमा प्राप्त करने के लिए उस नूर को हासिल करने के लिए नमाज़ भी इसी का हिस्सा है क्योंकि नमाज़ में भी इन्सान गुनाहों से तौबा करता है और अल्लाह तआला की क्षमा मांगता है ताकि प्रतिदिन दिल खोल खोल कर ख़ुदा तआला से मांग

लेवे। जिसमें विवेक है वह जानता है कि नमाज़ एक मेराज (उच्चतम स्तर) है तथा वह नमाज़ पढ़ने वाले की व्याकुलता तथा करुणा से भरी दुआ है जिसके द्वारा वह रोगों से मुक्ति प्राप्त कर सकता है।

(मल्फूज़ात जिल्द 7 पृष्ठ 124-125, एडिशन 1985 ई)

अर्थात रूहानी और जिसमानी, हर प्रकार के रोगों के लिए दुआओं की आवश्यकता है और दुआओं में इस्तिगफार की आवश्यकता है और नमाज़ भी इसी का भाग है।

अत: जब इन आयतों को पढ़ने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया तो केवल पढऩे से कुछ नहीं होगा अपितु कर्मों की अवस्था भी सुधारनी होगी, अपनी ओर ध्यान रखना होगा कि किस प्रकार हमने इस्तिगफार करना है किस प्रकार हमने अपनी नमाज़ों की रक्षा करनी है ताकि फिर हमारी भी रक्षा हो।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस्तिगफार की और अधिक व्याख्या करते हुए फरमाते हैं- इस्तिगफार का यही अर्थ है कि प्रत्यक्ष में कोई पाप न हो तथा पाप को प्रेरणा देने वाली शक्ति प्रकट न हो।अर्थात वे गुनाह जिस चीज़ से हो सकते हैं वह अवसर ही पैदा न हो और वह शक्ति ही पैदा न हो। फ़रमाया कि नबियों के इस्तिग्फार की भी यही वास्तविकता है कि वे होते तो निर्दोष हैं परन्तु वे इस्तिग्फार इस लिए करते हैं कि ताकि आइन्दा वह शक्ति ही प्रकट न हो। और सामान्य लोगों के लिए इस्तिग्फ़ार के यह अर्थ होंगे कि जो जुर्म और गुनाह हो गए हैं उनके बुरे अंजाम से ख़ुदा बचाए रखे और उन गुनाहों को माफ़ कर दे और साथ ही आइन्दा गुनाहों से सुरक्षित रखे। फ़रमाया बहरहाल यह इन्सान के लिए लाज़मी बात है कि वह इस्तिग्फार में हमेशा व्यस्त रहे। यह जो अकाल और विभिन्न प्रकार की आपदाएं संसार में आती हैं उनका मतलब यही होता है कि लोग इस्तिग्फार में व्यस्त रहें। (अत: जब इंसान कठिनाइयों में पड़ जाता हैं या अहमदियों पर कठिनाइयाँ हैं तो दुआओं की ओर तवज्जो होनी चाहिए और इस्तिग्फार की ओर भी तवज्जो होनी चाहिए)। फ़रमाया- इस्तिग्फार का यह अर्थ नहीं है कि बस अस्तगफिरुल्लाह-अस्तगफिरुल्लाह कहते रहें वास्तव में ग़ैर मुल्की ज़बान होने के कारण लोगों से वास्तविकता छुपी रही है। अरब के लोग तो इन बैटन को ख़ूब समझते थे परन्तु हमारे देश में ग़ैर मुल्की ज़बान होने के कारणबहुत सी वास्तविकताएँ छुपी रही हैं। बहुत से लोग हैं जो कहते हाँ कि हमने इतनी बार इस्तिग्फार किया सौ तस्बीह या हज़ार तस्बीह पढ़ीं परन्तु जब इस्तिग्फार का अर्थ पूछो तो बस कुछ नहीं हक्के बक्के रह जाएँगे। इंसान को चाहिए कि वास्तविक रूप से दिल ही दिल में माफी मांगता रहे कि वे पाप तथा दोष जो मेरे द्वारा हो चुके हैं उनका दंड न भोगना पड़े तथा भविष्य में दिल ही दिल में हर समय ख़ुदा तआला से सहायता मांगता रहे कि भविष्य में नेक कर्म करने का सामर्थ्य प्रदान करे तथा बुराईयों से बचाए, फ़रमाया ख़ूब याद रखो शब्दों से कुछ नहीं बनेगा अपनी भाषा में भी इस्तिग्फार हो सकता है कि ख़ुदा तआला पिछले गुनाहों को क्षमा करे और आइन्दा गुनाहों से सुरक्षित रखे और नेकी की तौफ़ीक़ दे और यही वास्तविक इस्तिग्फार है, कुछ ज़रूरत नहीं कि यूँही अस्तगफिरुल्लाह-अस्तगफिरुल्लाह कहता फिरे और दिल को ख़बर तक न हो (अगर दिल में भी इस्तिग्फार से वह नरमी तड़प और जोश पैदा नहीं होता और अल्लाह तआला का खौफ पैदा नहीं होता तो उस समय तक उसका कोई लाभ नहीं दिल में जोश पैदा होना चाहिए।) फ़रमाया कि- याद रखो ख़ुदा तक वही बात पहुंचती है जो दिल से निकलती है, अपनी भाषा में ही ख़ुदा तआला से बहुत दुआएँ मांगनी चाहिएँ, इससे दिल पर भी प्रभाव होता है। ज़बान तो सिर्फ दिल कि गवाही देती है अगर दिल में जोश पैदा हो और ज़बान भी साथ मिल जाए तो अच्छी बात है बिना दिल के केवल ज़बानी दुआएँ बे फ़ायदा हैं। हाँ दिल कि दुआएँ असली दुआएँ होती हैं। जब मुसीबत के समय से पहले ही इन्सान अपने दिल ही दिल में ख़ुदा तआला से दुआएँ मांगता रहता है और इस्तिगफार करता रहता है तो फिर ख़ुदा वंद रहीम व करीम की ओर से वह मुसीबत टल जाती है (ऐसा नहीं होना चाहिए कि मुश्किल आ गई मुसीबत आ गई तब दुआ मांगो बल्कि उससे पहले ही दुआएँ मांगते रहना चाहिए तो फ़रमाया कि ख़ुदा फिर उन मुसीबतों को टाल देता है) लेकिन जब मुसीबत आ जाती है तो फिर नहीं टला करती, मुसीबत के आने से पहले दुआ करते रहना चाहिए और बहुत इस्तिग्फार करने चाहिए। इसी प्रकार ख़ुदा मुसीबत के समय सुरक्षित रखता है। फ़रमाया कि हमारी जमाअत को चाहिए कोई विलक्षण बात भी दिखाए (कोई अंतर होना चाहिए) अगर कोई व्यक्ति बैत करके जाता है और कोई अंतर नहीं दिखाता अपनी पत्नी के साथ वैसा ही व्यवहार है जैसा पहले था और अपने बाल बच्चों से पहले की भांति पेश आता है तो यह अच्छी बात नहीं अगर बैत के बाद भी वही दुर्व्यवहार और रहा और वही हाल रहा जो पहले था तो फिर बैत करने का क्या लाभ? चाहिए कि बैत के बाद अपनों को भी ग़ैरों को भी रिश्तेदारों को भी पड़ोसियों को भी ऐसा आदर्श बन कर दिखाए कि वे बोल उठें कि अब यह वह नहीं रहा जो पहले था। फरमाया ख़ूब याद रखो साफ़ होकर काम करोगे तो दूसरों पर तुम्हारा अवश्य रौब पड़ेगा। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कितना बड़ा रौब था। एक बार काफिरों को पता चला कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके लिए बद्दुआ करेंगे तो वे सब काफिर मिल कर आए और निवेदन किया कि हुज़ूर बद्दुआ न करें। सच्चे आदमी का अवश्य रौब होता है चाहिए कि बिल्कुल साफ होकर अमल किया जाए और ख़ुदा के लिए किया जाए तब अवश्य तुम्हारा दूसरों पर भी असर और रौब पड़ेगा।

(मल्फूज़ात जिल्द 9 पृष्ठ 372-374, एडिशन 1985 ई लन्दन से प्रकाशित)

अत: इस्तिगफार करने तथा उसके यथार्थ को समझने की आवश्यकता है। ज़िक्र-ओ-अज़कार (ईश स्तुति), दुआएँ उसी समय काम आती हैं जब साथ साथ कर्मों की हालत भी सुन्दर बनाने का प्रयास हो। लोग कहते हैं कि कोई छोटी सी दुआ बता दें, हम पढ़ते रहें। छोटी सी दुआएँ भी तभी लाभ देती हैं जब कर्तव्यों का निर्वाह भी हो रहा हो। नमाज़े भी समय पर अदा हो रही हों तथा पाबन्दी के साथ अदा हो रही हों और रूचि के साथ अदा हो रही हों तो तभी ज़िक्र भी काम आएँगे।

फिर यहाँ अल्लाह तआला का गुण (सिफ़त) बयान फरमाई कि वह काबिलुत्तौब है अर्थात वह तौबा कबूल करने वाला है। तौबा का अर्थ है कि अपने पापों की क्षमा चाहते हुए अल्लाह तआला की ओर लौटना। अत: जब इंसान इस प्रतिज्ञा के साथ अल्लाह तआला के समक्ष उपस्थित हो कि मैं भविष्य में गुनाह नहीं करुंगा तथा सदैव पापों से बचने का प्रयास करता रहूँगा तो अल्लाह तआला इस भावना और निश्चय के साथ अपनी ओर आने वाले की क्षमा याचना को स्वीकार करता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस विषय को भी एक स्थान पर इस प्रकार बयान फरमाते हैं कि- वह दिन कौन सा दिन है जो जुम्अ: तथा ईदों से भी अच्छा तथा मुबारक दिन है? मैं तुम्हें बताता हूँ कि वह दिन इंसान की तौबा का दिन है इनसे उत्तम है तथा प्रत्येक ईद से बढ़कर है। क्यूँ? इस लिए कि उस दिन वह बुरे कर्मों का प्रपत्र जो इंसान को नरक के निकट करता जाता है तथा भीतर ही भीतर अल्लाह के प्रकोप के नीचे उसे ला रहा था, धो दिया जाता है तथा उसके पाप क्षमा कर दिए जाते हैं। जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया-

إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ التَّوَّابِينَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِينَ (अल्बक़रा:223)

नि:सन्देह अल्लाह तआला तौबा करने वालों को दोस्त रखता है तथा उन लोगों से जो पवित्रता चाहते हैं, प्यार करता है। इस आयत में न केवल यह पाया जाता है कि अल्लाह तआला तौबा करने वालों को अपना प्रेमी बना लेता है अपितु यह भी ज्ञात होता है कि वास्तविक तौबा के साथ वास्तविक पवित्रता तथा शुद्धता भी शर्त है। हर प्रकार की गन्दगी तथा बुराई से अलग होना अनिवार्य शर्त है अन्यथा केवल तौबा तथा केवल शब्दों को बार बार पढऩे से तो कोई लाभ नहीं है। अत: जो दिन ऐसा मुबारक दिन हो कि इंसान अपने बुरे कर्मों से तौबा करके अल्लाह तआला के साथ सन्धि की सच्ची प्रतिज्ञा बाँध ले तथा उसके आदेशों का पालन करने के लिए अपना सिर झुका दे तो क्या सन्देह है कि वह इस प्रकोप से जो गुप्त रूप से उसके बुरे कर्मों के कारण

तय्यार हो रहा था, बचाया जावेगा तथा इसी प्रकार से वह, वह चीज़ प्राप्त कर लेता है जिसकी मानो उसे आशा और उम्मीद ही न रही थी।

फ़रमाया कि "तुम खुद अनुमान लगा सकते हो कि एक व्यक्ति जब किसी वस्तु को प्राप्त करने से पूर्णत: मायूस हो चूका हो और इस मायूसी की हालत में वह अपनी उद्देश्य को पा ले तो उसे कितनी ख़ुशी होगी उसका दिल एक ताज़ा ज़िन्दगी पाएगा यही कारण है कि हदीसों में इसका वर्णन किया गया है। हदीसों और पिछली किताबों से यही पता चलता है कि जब इन्सान गुनाहों की मौत से निकल कर तौबा के द्वारा नया जीवन पाता है तो अल्लाह तआला उसकी ज़िन्दगी से प्रसन्न होता है वास्तव में यह ख़ुशी की बात तो है ही कि इन्सान गुनाहों के नीचे दबा हो और हलाकत और मौत हर ओर से उसके निकट हो। ख़ुदा का अज़ाब हर ओर से उसको खाने के लिए तैयार हो कि वह अचानक इन बुराइयों और गुनाहों से जो दूरी और जुदाई का कारण थीं तौबा करके ख़ुदा तआला की ओर आ जाएवह समय ख़ुदा तआला की ख़ुशी का होता है और आसमान पर फ़रिश्ते भी ख़ुशी मनाते हैं क्योंकि अल्लाह तआला नहीं चाहता कि उसका कोई बंदा तबाह हो। बल्कि वह तो चाहता है कि अगर उसके बन्दे से कोई गलती हो भी जाए फिर भी तौबा करके अमन में प्रवेश करे। अत: याद रखो कि वह दिन जिस दिन बंदा गुनाहों से तौबा करता ही वह दिन बहुत मुबारक दिन है और सब दिनों से श्रेष्ठ है क्योंकि वह उस दिन नया जीवन पाटा है और ख़ुदा के करीब किया जाता है और इस लिहाज़ से यह दिन (जिस में तुम में से बहुतों ने इकरार किया अर्थात बैत का दिनकि मैं आज अपने तमाम गुनाहों से तौबा करता हूँ और आइन्दा जहाँ तक मेरी ताक़त और समझ है गुनाहों से बचता रहूँगा) तौबा का दिन है। और अल्लाह तआला के वादा के अनुसार मैं विशवास रखता हूँ कि हर व्यक्ति जिसने सच्चे दिल से तौबा की है उसके पिछले गुनाह माफ़ कर दिए गए। और اَلتَّائِبُ مِنَ الذَّنْبِ كَمَنْ لَّا ذَنْبَ لَهٗ के नीचे आ गया मानो कि कह सकते हैं कि उसने कोई गुनाह किया ही नहीं। मग हाँ मैं फिर कहता हु कि इसके लिए यह शर्त है वास्तविक पवित्रता और सच्ची स्वच्छता की ओर क़दम बढ़ाया जाए और यह तौबा निरी शाब्दिक तौबा ही न हो बल्कि अमल के नीचे आ जाए यह छोटी सी बात नहीं है कि किसी के गुनाह माफ़ कर दिए जाएं बल्कि एक बहुत बड़ी बात है।"

फिर फ़रमाया-"देखो इंसानों में अगर कोई किसी की थोड़ी से गलती करे तो कभी कभी उसका द्वेष नस्लों तक चला जाता है वह व्यक्ति नस्ल के बाद दूसरी नस्ल तक बदले की तलाश में रहता है कि अवसर मिले तो बदला लिया जाए लेकिन अल्लाह तआला बड़ा ही दयावान और दयालु है, इंसान की भांति कठोर दिल का नहीं है जो एक पाप के बदले में कई पीढियों तक पीछा नहीं छोड़ता और नष्ट करना चाहता है परन्तु वह रहीम करीम ख़ुदा सत्तर वर्षों के पापों को एक कलिमा से एक पल में क्षमा कर देता है। यह मत विचार करो कि वह क्षमा करना ऐसा है कि उसका कोई लाभ नहीं, नहीं। वह क्षमा करना वास्तव में बहुत लाभकारी है और उसको वे लोग ख़ूब अनुभव करते हैं जिन्होंने सच्चे दिल से तौबा की हो।"

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 7 पृष्ठ 148-150, एडिशन 1985 ई, लन्दन से प्रकाशित)

अत: यह वास्तविक तौबा है जो फिर सुरक्षा का प्रबंध करती है अगर यह नहीं तो अल्लाह तआला फरमाता है कि वह शदीदुल इक़ाब (बहुत कठोर दण्ड देने वाला) भी है। अर्थात इन्सान जब अल्लाह तआला के आदेशों की परवाह नहीं करता तो तो वह उसे दण्ड भी देता है।

और फिर फरमाया वह ज़ित्तूल है अर्थात वह बड़ा दानी है, वह लाभ प्रदान करने की अति सीमा कर देता है। उसके जो वरदान हैं उनकी कोई सीमा नहीं है क्यूँकि उसके पास शक्ति है, वह सब कुछ प्रदान कर सकता है। उसके खज़ाने असीमित हैं। अल्लाह तआला फरमाता है कि मेरी इन विशेषताओं को याद रखो तो सदैव तुम कृपा प्राप्त करते रहोगे। उसके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं है जो इतना सामर्थ्य रखता हो और हमने इस दुनिया में भी और मरने के पश्चात भी उसी की ओर जाना है। इस प्रकार जब यह आभास रहेगा कि अन्तत: लौटना ख़ुदा तआला की ही ओर है तो फिर नेकियाँ करने तथा उसके आदेशानुसार चलने की ओर ध्यान रहेगा और जब यह अवस्था हो तो फिर नि:सन्देह ख़ुदा तआला सुरक्षा फरमाता है।

फिर दूसरी आयत है जिसकी ओर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक अवसर पर इस ओर भी तवज्जो दिलाई जो आयत अलकुर्सी के बारे में है। उसके विषय में हदीस में वर्णन मिलता है हज़रत अबू हुरैरा बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि प्रत्येक वस्तु का एक कोहान (चोटी) होता है तथा क़ुर्आन-ए-करीम का कोहान सूर: बकर: है तथा उसमें एक आयत ऐसी है जो क़ुर्आन-ए-करीम की सारी आयतों की सरदार है और वह आयतुल कुर्सी है।

(सुनन तिरमिज़ी अबवाब फज़ाइलुल क़ुरआन, बाब मा जाअ फी सूरतिल बक़रा व आयतुल कुर्सी हदीस 2878)

इसकी व्याख्या में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं-اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ अर्थात वही ख़ुदा है, उसके अतिरिक्त कोई नहीं। वही प्रत्येक जान की जान है तथा प्रत्येक अस्तित्व का सहारा है। इस आयत का शाब्दिक अर्थ यह है, जीवित वही ख़ुदा है तथा व्यापक वही ख़ुदा है। अत: जबकि वही एक जीवित है तथा वही एक व्यापक है तो इससे स्पष्ट होता है कि प्रत्येक व्यक्ति जो उसके अतिरिक्त जीवित दिखाई देता है, वह उसी के जीवन से जीवित है तथा प्रत्येक जो धरती अथवा आकाश में स्थापित है वह उसी के द्वारा स्थापित है।

(चश्म-ए-मारिफत रूहानी खज़ायन जिल्द 23, पृष्ठ 120)

फिर और अधिक व्याख्या फरमाते हुए आपने फरमाया कि जानना चाहिए कि अल्लाह तआला के क़ुर्आन शरीफ ने दो नाम पेश किए हैं, अलहय्यु और अलकय्यूम। अलह्यी का अर्थ है कि ख़ुदा जीवित है तथा दूसरों को जीवन प्रदान करने वाला है। अलकय्यूम, स्वयं स्थापित है तथा दूसरों की स्थापना का वास्तविक कारण है। प्रत्येक वस्तु की प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष स्थापना तथा जीवन, इन्हीं दोनों विशेषताओं के कारण है। अत: ह्यी का शब्द चाहता है कि उसकी उपासना की जाए, इसका प्रमाण सूर: फातिह: में इय्याका नअबुदु है और अलकय्यूम चाहता है कि उससे सहारा मांगा जाए, इसको इय्याका नस्तअीन से अदा किया गया है। (ज़िन्दा रहना है,रूहानी तौर पर पर भी ज़िन्दा रहना है और और ह्यी सिफत से भी लाभ उठाना है तो उसकी इबादत करना आवश्यक हिया और इबादत के लिए सहायता भी उससे मांगने की आवश्यकता है कि अल्लाह तआला तौफ़ीक़ दे कि हम इबादत करने वाले हों।) फ़रमाया कि ह्यी का शब्द इबादत को इसलिए चाहता है कि उसने पैदा किया और फिर पैदा करके छोड़ नहीं दिया जैसे उदहारण स्वरुप कारीगर जिसने जिसने इमारत को बनाया है उसके मर जाने से ईमारत का कोई नुकसान नहीं परन्तु इन्सान को ख़ुदा की आवश्यकता हर हाल में होती है।इसलिए आवश्यक है कि ख़ुदा से शक्ति मांगते रहें और यही इस्तिग्फार है।"

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 3 पृष्ठ 217, एडिशन 1985 ई, लन्दन से प्रकाशित)

इस्तिग्फार के विषय की व्याख्या पहले विस्तार से हो चुकी है कि अल्लाह तआला के फैज़ की रौशनी को निरंतर जारी रखने के लिए इस्तिग्फार की आवश्यकता है और यह इस्तिग्फार ही इबादत है और इससे शक्ति मिलती है।

फिर आयतुल कुर्सी में जो सिफारिश का विषय बयान हुआ है, उसको बयान फरमाते हुए यह विचार बिन्दु आपने बयान फरमाया कि प्रत्येक इंसान जब दूसरे के लिए दुआ करता है तो यह भी एक प्रकार की सिफारिश है तथा एक मोमिन की विशेषता होनी चाहिए जो सदैव वह करता रहे। आपने फ़रमाते हैं कि ख़ुदा की इच्छा के बिना कोई शिफारिश नहीं हो सकती। (अल्लाह तआला ने फरमा दिया है) क़ुरआन शरीफ के अनुसार शिफारिश कका अर्थ यह है कि एक व्यक्ति अपने भाई के लिए दुआ करे कि वह मतलब उसको हासिल हो जाए या कोई मुसीबत टल जाए (अर्थात जिस उद्देश्य के लिए किसी ने दुआ के लिए कहा है उसके लिए दुआ करे कि वह उद्देश्य उसका पूर्ण हो जाए अगर मुसीबत और बला है तो वह टल जाए) फ़रमाया कि "अत: क़ुर्आन शरीफ का आदेश है कि जो व्यक्ति ख़ुदा तआला के समक्ष अधिक

झुका हुआ है वह अपने दुर्बल भाई के लिए दुआ करे कि उसको वह स्तर प्राप्त हो। यही सिफारिश की वास्तविकता है, सो हम अपने भाईयों के लिए नि:सन्देह दुआ करते हैं कि ख़ुदा उनको शक्ति प्रदान करे तथा उनकी कठिनाई दूर करे तथा यह एक सहानुभूति की शाखा है।

(नसीम दावत, रूहानी खज़ायन जिल्द 19, पृष्ठ 463)

फिर आपने फरमाया कि चूँकि सारे इंसान एक शरीर की भांति हैं इस लिए ख़ुदा तआला ने हमें बार बार सिखलाया है कि यद्यपि सिफारिश स्वीकार करना उसका काम है परन्तु तुम अपने भाईयों की सिफारिश में अर्थात उनके लिए दुआ करने में लगे रहो तथा सिफारिश से अर्थात सहानुभूति पूर्ण दुआ से न रुको कि तुम्हारा एक दूसरे पर अधिकार है। (एक दूसरे के लिए दुआ करन एक दूसरे का कर्तव्य है) वास्तव में शफाअत का शब्द, शुफअ: से लिया गया है तथा शुफअ:: जुफत को कहते हैं। इस प्रकार इंसान को उस समय शफीअ कहा जाता है जबकि वह सम्पूर्ण सहानुभूति से दूसरे का जुफत होकर उसमें विलय हो जाता है तथा दूसरे के लिए हेसी ही भलाई मांगता है जैसा कि अपने आप के लिए तथा याद रहे कि किसी व्यक्ति का दीन पूरा नहीं हो सकता जब तक शफाअत के रंग में सहानुभूति उसमें पैदा न हो। बड़ी सहानुभूति होनी चाहिए एक दूसरे के लिए। बल्कि फरमाया- बल्कि दीन के दो ही सम्पूर्ण भाग हैं, एक ख़ुदा से प्रेम करना और एक मानव जाति से इतना प्रेम करना कि उनकी कठिनाई को अपनी कठिनाई समझ लेना तथा उनके लिए दुआ करना जिसको दूसरे शब्दों में सिफारिश कहते हैं।

(नसीम दावत, रूहानी खज़ायन जिल्द 19, पृष्ठ 464)

यह एक विचार बिन्दु है जिसे आयतुल कुर्सी पढ़ते समय हम सामने रखें तो मानव जाति के लिए सहानुभूति की भावनाएँ बढेंग़ी।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब यह आयत पढऩे की प्रेरणा दी हमें तो इसमें ईमान लाने वालों के परस्पर सहानुभूति की भावनाएँ स्थापित करने के लिए विशेष निर्देश है तथा मानव समाज के लिए सामान्य रूप से ध्यानाकर्षित किया है कि प्रत्येक के लिए सहानुभूति की भावना तुम्हारे दिल में होनी चाहिए। लेकिन दुर्भाग्य से मुसलमान आजकल आपस में ही एक दूसरे के खून के प्यासे हैं और दावा यह है कि हम क़ुरआन और हदीस पर अमल करने वाले हैं बहरहाल यह भी याद रखन चाहिए कि वास्तविक शिफारिश का अधिकार अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को प्रदान किया है और उसके नज़ारे आपके जीवन में हमने देखे अत: इसको बयान करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि:- आखिरत का शफीअ वह सिद्ध हो सकता है जिसने दुनिया में भी कोई सिफारिश का नमूना दिखाया हो" आखिरत में भी वही शफीअ होगा। यही आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में आया है कि वे सिफारिश करेंगे। अत: इस मियार को सामने रख कर जब हम हज़रत मूसा पर नज़र डालते हैं तो वे भी शफीअ सिद्ध होते हैं क्योंकि कई बार उसने उतरता हुआ अज़ाब दुआ से टाल दिया, इसकी तौरात गवाह है। इसी प्रकार जब हम आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नज़र डालते हैं तो आपका शफीअ होना स्पष्ट सिद्ध होता है। "क्योंकि आपकी सिफारिश का ही असर था कि आपने ग़रीब सहाबा को तख़्त पर बिठा दिया और आपकी सिफारिश का ही असर था कि बावजूद इसके कि वे लोग मूर्ती पूजा में ही पले बढ़े थे ऐसे एकेश्वरवादी बन गए कि जिसका उदाहरण किसी युग में नहीं मिलता और फिर आपकी सिफारिश का ही असर है कि अब तक आपका अनुसरण करने वाले ख़ुदा का सच्चा इल्हाम पाते हैं, ख़ुदा उनसे बातें करता है। परन्तु मसीह इब्न मरयम में यह सब सबूत कैसे और कहाँ से मिल सकते हैं" फ़रमाया कि हमारे सय्यद व मौला मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सिफारिश पर इससे बढ़ कर और ज़बरदस्त गवाही क्या होगी कि हम इस जनाब के वास्ते से जो कुछ ख़ुदा से पाते हैं हमारे शत्रु वह नहीं पा सकते। अगर हमारे विरोधी इस परीक्षा की ओर आयें तो कुछ दिन में फ़ैसला हो सकता है।"

(इस्मत-ए-अम्बिया, रूहानी खज़ायन जिल्द 18, पृष्ठ 699-700)

आखिरत का शफीअ वह सिद्ध हो सकता है जिसने दुनिया में शफाअत का कोई नमूना दिखलाया हो। जब हम आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दृष्टि डालते हैं तो आपका शफीअ होना बिल्कुल स्पष्ट दिखाई देता है क्यूँकि आपकी शफाअत का ही प्रभाव था कि आपने निर्धन सहाबा को सिंहासन पर बिठा दिया तथा आपकी शफाअत का ही प्रभाव था कि वे लोग हेसे एकेश्वरवादी हो गए जिनका उदाहरण किसी युग में नहीं मिलता और फिर आपकी शफाअत का ही प्रभाव है कि अब तक आपका अनुसरण करने वाले ख़ुदा का सच्चा इलहाम पाते हैं।

फिर आयतल कुर्सी के अन्त में जो दो विशेषताएँ बयान की गईं हैं अल्लाह तआला की, अर्थात अलीय्युन- बड़ी बुलन्द शान वाला और उससे बुलन्द किसी की शान नहीं है, वही धरती और आकाश का स्वामी है तथा वह महानतम है। उसकी महानता एवं बड़ाई तथा उच्चतम शान का वह स्तर है जिस तक कोई नहीं पहुंच सकता। उसकी महानतम शान प्रत्येक वस्तु को घेरे में लिए हुए है तथा कोई चीज़ उसकी परिधि और प्रभुत्व से बाहर नहीं है। अलिय्युं होना यह उसकी बुलंद शान है और अज़ीम होना इसके यह अर्थ हैं उसकी अज़मत, बड़ाई और बुलंद शान का मुक़ाम है जिस तक कोई नहीं पहुँच सकता यह अज़ीम होने के अर्थ हैं। और अज़ीम होने के ये भी अर्थ हैं कि हर चीज़ को परिधि में लिए हुए है और कोई चीज़ उसकी परिधि और प्रभुत्व से बाहर नहीं है, यह है उसकी अज़मत और बुलंदी।

इस आयत के अन्तिम भाग की व्याख्या करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि ख़ुदा तआला की कुर्सी के बारे में यह आयत है कि-

وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ - وَلَا يَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا - وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ہ

अर्थात- ख़ुदा की कुर्सी के भीतर सारी धरती एवं आकाश समाए हुए हैं तथा वह उन सबको उठाए हुए है, उनको उठाने से वह थकता नहीं तथा वह बड़ा उच्चतम है, कोई बुद्धि उसकी गहराई तक नहीं पहुंच सकती तथा वह अत्यधिक महान है, उसकी महानता के आगे सारी चीज़े तुच्छ हैं। यह है वर्णन कुर्सी का और यह केवल एक रूपक (संकेत) है जिसके द्वारा यह जतलाना मंज़ूर है कि धरती और आकाश सब ख़ुदा के आधीन हैं तथा इन सबसे उसका स्तर बड़ी दूर है तथा उसकी महानता का कोई छोर नहीं है।

(चश्म-ए-मारिफत रूहानी खज़ायन जिल्द 23, पृष्ठ 118, हाशिया)

अत: वह महान ख़ुदा है जिसकी महानता का कोई किनारा नहीं और जिसकी सीमाएं असीमित हैं उसने हर एक चीज का घेराव किया हुआ है और उसकी कोई सीमा नहीं। अत: जब इंसान को इन बातों की समझ होगी और यह समझ कर इंसान आयत पढ़े तो तभी अल्लाह तआला की आगोश में आ सकता है, उसकी सुरक्षा में आ जाता है जब इंसान अल्लाह तआला की सुरक्षा में आने की कोशिश करता है तो फिर इंसान अल्लाह तआला के अधिकार और मानवजाति के अधिकार पूर्ण करने का प्रयत्न करता है और करना चाहिए और जब यह अधिकार पूर्ण हो रहे होंगे तो अल्लाह तआला भी फिर सुरक्षा करता चला जाता है।

अत: यह विषय है जिसे हमें अपने सामने रखते हुए आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो यह हिदायत फरमाई है कि जो यह आयात पढ़े वह अल्लाह तआला की सुरक्षा में रहेगा तो इन आयतों का केवल पढ़ना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि उसके विषय पर विचार करते हुए उन बातों को अपनाने की आवश्यकता है और समझ पैदा करने की आवश्यकता है। जो इन आयतों के बारे में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया। क़ुरआन करीम ने उसकी व्याख्या कई जगह पर की है और फिर हज़रत मसीह मौऊद अलै-हिस्सलाम ने उसको खोल कर हमारे सामने रखा। अगर यह बातें होंगी तो फिर इंसान ख़ुदा तआला के फजल से उसकी सुरक्षा में रहेगा। अल्लाह तआला हमें उसके अनुसार अपने जीवन व्यतीत करने का सामर्थ्य प्रदान करे।

नमाज के बाद आज भी मैं एक जनाज़ा गायब पढ़ाऊंगा जो आबिदा बेगम साहिबा पत्नी प्रोफेसर अब्दुल कादिर डाहरी साहब का है जो नवाबशाह की

रहने वाली थीं। 22 जनवरी को 75 वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु हुई। उनके पिता का नाम नियाज मोहम्मद खान था यह सरकारी अफसर थे। पहले वहाँ पूर्वी पाकिस्तान में फिर कराची में भी चीफ कमिश्नर रहे। लेकिन यह अहमदी नहीं थे। आबिदा बेगम की माता अहमद थीं और औलाद में से आबिदा बेगम जो हैं यह अहमदी हुई और उन्होंने 1963 ईस्वी में बैयत की और इसके बाद अल्लाह तआला के फजल से वसीयत भी की और फिर हज़रत खलीफटूल मसीह सालिस ने ही उनकी शादी शिक्षा पूर्ण करने, बी ए करने के बाद प्रोफेसर अब्दुल कादिर डाहरी साहिब से करवाई। उनको अल्लाह तआला ने पांच बेटियां और एक बेटा प्रदान किए। नवाबशाह शहर की सदर लजना रहीं और फिर लंबा समय सदर लजना जिला नवाबशाह रहीं और बहुत सेवा का अवसर मिला। सदारत के दौरान मीटिंग के आयोजन मे लजना के साथ भरपूर संपर्क रखा। जिला के दौरे बड़े दूर दूर के इलाकों में करती रही। यद्यपि बड़े घराने से संबंध रखती थीं लेकिन स्वयं अत्यंत सादा स्वभाव थीं। कमजोरों और निर्धनों की सहायता करती और कमजोर अहमदी घराने जो थे उनमें अवश्य जाया करती थीं। तबलीग का उनको बड़ा शौक था। नवाबशाह से उन्होंने लगभग 17 औरतों को तबलीग करके बैयत करवाई घर के आस-पास रहने वाले बच्चों को क़ुरआन करीम भी पढ़ाती थीं। उनके पति को सिंधी भाषा में क़ुरआन करीम का अनुवाद करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वह नवाबशाह शहर के अमीर भी रहे और फिर जिला नवाबशाह के अमीर भी बने। आजकल उनके बेटे अमीर जिला हैं। बच्चों को उन्होंने उच्च शिक्षा दिलवाई अत्यंत इबादत करने वाले, निडर, बहादुर और अत्यंत सब्र और शुक्र करने वाले और सादा स्वभाव के मालिक थे। कुर्बानी करने वाली और वफादार महिला थीं। जमाअत और खिलाफत के साथ अत्यंत प्रेम और श्रद्धा का संबंध था उनके बेटे लिखते हैं कि खलीफ़तुल मसीह का मार्गदर्शन हर काम में प्राप्त करने का प्रयत्न करती, यहां तक कि 2 साल पूर्व अत्यंत बीमार हो गईं और शुगर बढ़ने के कारण टांग में ऐसा घाव था कि टांग काटने की आवश्यकता थी, तो उन्होंने कहा जब तक हुज़ूर अनवर से इजाजत नहीं मिलेगी मैं ऑपरेशन नहीं करवाऊंगी और कई दिन इस प्रतीक्षा में रहीं और जब तक उन्होंने मुझसे यहां से अनुमति नहीं ले ली टांग नहीं कटवाई इसके बाद उन्होंने कहा अब बेशक जो मर्जी करो। अल्लाह तआला के फजल से बैयत के बाद बावजूद औरत होने के उनकी दृढ़ता का यह हाल था कि यह और उनकी माता अहमदी थीं तो माता जी की मृत्यु के बाद उनके भाइयों ने कहीं गैर अहमदियों के ही किसी कब्रिस्तान में उनको दफना दिया। माता क्योंकि मूसिया (निज़ाम वसीयत में सम्मिलित) थीं। उन्होंने भाइयों के दबाव के बावजूद वहां से लाश निकलवाई और फिर अपनी मां की लाश को रबवा लेकर आईं और बहिश्ती मक़बरा में दफन करवाया।

अल्लाह तआला की फजल से हर मामले में हिम्मत से काम करने वाली थीं। कादियान और UK के जलसा में नियमित रूप से सम्मिलित होती थीं। हज़रत खलीफा राबेअ ने उनके बारे में उनके बेटे को एक बार कहा कि तुम्हें पता है कि तुम्हारी माता अहमदियत के लिए एक नंगी तलवार है। 85 ईस्वी में जब ज़िया ऑर्डिनेंस के बाद कलिमा मिटाया जा रहा था तो कलिमा से मोहब्बत का सबूत उन्होंने इस तरह दिया कि जब जमाअत को कहा गया कि अपने घरों में कलिमा लिखें तो सीढ़ी लगा कर खुद टंकी पर चढ़कर अपने हाथ से कलिमा लिख दिया हालांकि एक तो महिला थीं और दूसरे ऐसे खानदान से थीं जो सामान्यत: इन बातों का बहुत लिहाज रखते हैं।

जाते जाते भी जो उनके अंतिम दिन थे उनके बेटे कहते हैं कि मृत्यु के समय से कुछ देर पहले सांस लेने में बड़ी दिक्कत हो रही थी तो कुछ पैसे उनके हाथ में दिए कि वक़्फ़े जदीद और तहरीक जदीद का बकाया चंदा है यह जल्दी से अदा कर दो। डिश लगवाने के लिए उन्होंने वहां अहमदी घरों के लिए एक स्कीम इस तरह शुरू की कि कमेटी लजना की डाली और हर महीना किसी ना किसी की कमेटी निकलती तो उससे हर घर में डिश लग जाता। इस तरह खुत्बा सुनने का प्रबंध हो जाता था। उनके दामाद मिर्जा अहसन इमरान ऑस्ट्रेलिया के जमाअत के ओहदेदार हैं वह भी लिखते हैं कि बड़ी निडर और बहादुर और अहमदियत के लिए हर कुर्बानी के लिए तैयार रहती थीं। तिलावत और खुत्बे अत्यंत नियमित रूप से करती और सुनती थी। बावजूद इसके कि उनको सिंधी भाषा नहीं आती थी बल्कि उर्दू भी सही तरह से नहीं आती थी सरकारी अफसर की बेटी होने के कारण पहले पूर्वी पाकिस्तान में रहे फिर अन्य स्थानों पर रही अंग्रेजी भाषा उनकी बहुत अच्छी थी परंतु उन्होंने शादी के बाद अपने माहौल में अपने आप को एडजस्ट कर लिया और इस माहौल में रहकर सिंधी भाषा भी सीखी और अपने गैर अहमदी सिंधी रिश्तेदारों को तबलीग भी करती थीं। अल्लाह तआला उनसे मगफिरत और रहमत का सलूक करे और दर्जा बुलंद करे और उनकी औलाद को भी उनकी अच्छाइयों पर चलने का सामर्थ्य प्रदान करे।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फरमाया- अत: यह विषय है जिसे हमें अपने सामने रखते हुए आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो प्रेरणा फरमाई है कि यह आयत पढ़े तो वह अल्लाह तआला की सुरक्षा में रहेगा तो आयतें केवल पढऩा की काफी नहीं है बल्कि इनके भावार्थ पर विचार करते हुए इन बातों को अपनाने की भी आवश्यकता है तथा समझने और यथार्थ को पाने की भी आवश्यकता है जो इन आयतों के बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया। यदि ये बातें होंगी तो फिर इंसान ख़ुदा तआला की कृपा से उसकी सुरक्षा में रहेगा। अल्लाह तआला हमें इसके अनुसार अपने जीवन व्यतीत करने का सामर्थ्य प्रदान करे।

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَاوِيلِ لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**

Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186

Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab

For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

पृष्ठ 2 का शेष

में से कुछ अनियमित हैं।

मीटिंग जारी रही और एक अवसर पर हुज़ूर अनवर ने अत्यंत सुंदर अंदाज में फरमाया- चाहे आपका मेरे से कोई व्यक्तिगत संबंध हो या न हो आपको हमेशा याद रखना चाहिए कि मैं आप में से हर एक के लिए दुआ करता हूं।

जामिया अहमदिया केनडा के पास होने वाले मुबल्लिगों की हुज़ूर अनवर के साथ मीटिंग

इसी दिन तीसरे पहर जामिया अहमदिया कैनेडा से साल 2016 में पास होने वाले मुबल्लिगों की हुज़ूर अनवर के साथ मीटिंग हुई। यह मुबल्लिगीन हुज़ूर अनवर की हिदायत पर अफ्रीका जाने वाले थे ताकि वे वहां की स्थानीय जमाअतों में जाएं और कुछ हफ्तों के लिए तबियत प्राप्त कर सकें।

हुज़ूर अनवर ने सामान्य रूप से मुबल्लिगों को हिदायत देते हुए फरमाया- आज की इस मीटिंग का बुनियादी उद्देश्य आपसे परिचय प्राप्त करना है लेकिन क्योंकि आप निकट ही अफ्रीका जाने वाले हैं इसलिए मैं आपको कुछ उपदेश करना चाहता हूं। याद रखें अगर आप अफ्रीका के लोगों से प्यार मोहब्बत से पेश आएंगे और उनसे अच्छा सलूक करेंगे तो वे आपकी खातिर मरने के लिए भी तैयार होंगे। लेकिन अगर आप किसी प्रकार की अफसरी दिखाएंगे तो वे आप का साथ नहीं देंगे और क्रोधित हो जाएंगे। हुज़ूर ने फिर फरमाया जब आप बहुत दूर के देहात में जाएं तो ट्रीटेड पानी पीने की कोशिश करें या कम से कम इस बात की पूर्णता संतुष्टि कर लें कि जो पानी आप पी रहे हैं वह उबला हुआ हो। इसके अतिरिक्त आप को स्थानीय भोजन खाना चाहिए और स्थानीय लोगों और जमाअतों से मिलना जुलना चाहिए। हुज़ूर अनवर ने अपना एक व्यक्तिगत वृतांत बयान करते हुए फरमाया अफ्रीका में रहन सहन का मियार अब बहुत अच्छा हो चुका है लेकिन जब मैं वहां था तो कभी-कभी मुझे बाहर भी सोना पड़ता था। इसलिए अगर अवसर मिले तो आपको भी कम से कम एक दफा बाहर सोना चाहिए। हुज़ूर अनवर ने इस मीटिंग को इन शब्दों के साथ खत्म किया कि अफ्रीका के लोग आप को देखेंगे और आप के नमूने पर चलेंगे। अत: अगर आप फजर के समय सोते रहेंगे तो वे यह गुमान करेंगे कि फजर के समय सोना सब लोगों के लिए जायज है।

आप अब मुबल्लिग हैं इसलिए हमेशा याद रखें अल्लाह तआला आपके हर कदम और हर काम को देख रहा है। अत: अपनी जिम्मेदारियों को ईमानदारी और दियानतदारी के साथ पूरा करने की कोशिश करते रहें।

हुज़ूर अनवर के हिकमत भरे शब्द

इसी दिन शाम को मुझे हुज़ूर अनवर से मुलाकात करने का सौभाग्य मिला और मैंने हुज़ूर अनवर को बताया कि बर्तानिया के एक प्रसिद्ध इंतिहा पसंद मुसलमान आलिम को दहशतगर्द आतंकवादी कार्रवाइयां करने की वजह से सज़ा सुनाई गई है और मीडिया वाले निरंतर हमारे साथ संपर्क में थे और वह पूछ रहे थे कि क्या हम इस पर खुश और संतुष्ट हैं कि उसे सज़ा सुनाई गई है। मुझे विश्वास था कि हुज़ूर अनवर मुझे कहेंगे कि हम खुश हैं क्योंकि वह आतंकवादी था। लेकिन हुज़ूर अनवर का उत्तर इसके विपरीत था और मैं कभी अनुमान भी नहीं कर सकता था कि हुज़ूर इतना खूबसूरत उत्तर देंगे। हुज़ूर ने फरमाया हम इस पर कभी भी खुश नहीं हो सकते क्योंकि उसकी सजा का अर्थ यह है कि एक मुसलमान ने देश के कानून की अवहेलना की है और उसने नफरत और आतंकवाद फैलाया है और उसने यह सब कुछ इस्लाम के नाम पर किया है। फिर हम आज किस तरह खुश हो सकते हैं, हम इस खबर से किस तरह संतुष्ट हो सकते हैं। हुज़ूर अनवर ने फिर फरमाया निसंदेह यह बात अच्छी है कि उसे अब कानून की गिरफ्त में लाया गया है और मैं उम्मीद करता हूं कि यह दूसरे हिंसक लोगों के लिए भी एक चेतावनी होगी और उन लोगों के लिए भी जो हिंसा को पसंद करते हैं लेकिन फिर भी हम कभी खुश नहीं हो सकते कि इस्लाम के पवित्र नाम को एक बार फिर बदनाम किया गया। हम कभी खुश नहीं हो सकते कि यह व्यक्ति नफरतें फैलाता है और दूसरे मुसलमानों को भी हिंसा की ओर बढ़ावा देता है।

जलसा सालाना UK 2016 से पहले और बाद में कुल 2 हफ्तों में मैंने खिलाफत की बरकतों को बार बार देखा। हुज़ूर अनवर ने व्यक्तिगत तौर पर हज़ारों अहमदियों को मुलाकात का सौभाग्य प्रदान किया। जलसा सालाना के तीनों दिन हुज़ूर अनवर ने भाषण दिए। दूसरे देशों से आने वाले बहुत से प्रतिनिधिमंडलों ने हुज़ूर अनवर से मुलाकात का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर ने कई मीडिया इंटरव्यू दिए और साथ-साथ विभिन्न ओहदेदारों और कर्मचारियों और सेवकों को निरंतर मार्ग दर्शन प्रदान किया। सबसे बढ़कर यह के हुज़ूर के शब्द, हुज़ूर का प्यार, हुज़ूर की मोहब्बत,हुज़ूर की दया ने हर क़ौम से संबंध रखने वाले लोगों को छुआ। ख़िलाफ़त की बरकतें कभी ख़त्म नहीं होंगी। वैश्विक स्तर पर उनको देखा जा रहा है और हमेशा देखा जाता रहेगा।

(अख़बार अल्फज़ल इंटरनेशनल उर्दू 2 फरवरी 2018)

जामिया अहमदिया में दाखिला लेने वालों में से सबसे अधिक संख्या वक्फीन-ए-नौ की होनी चाहिए

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन खलीफतुल मसीह खामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फरमाते हैं:- "जामिया अहमदिया में जाने वालों की संख्या वाकिफीन-ए-नौ में सबसे अधिक होनी चाहिए। ....हमारे सामने सारी दुनिया का मैदान है। एशिया, अफ्रीका, यूरोप, अमरीका, आस्ट्रेलिया, द्वीप, प्रत्येक स्थान पर हमने पहुंचना है। हर जगह, हर महाद्वीप में नहीं, हर देश में नहीं, हर शहर में नहीं, बल्कि हर क़स्बे में, हर गाँव में, दुनिया के हर व्यक्ति तक इस्लाम के खूबसूरत पैगाम को पहुँचाना है। इसके लिए कुछ थोड़े से मुबल्लिग काम को पूर्ण नहीं कर सकते।"

(ख़ुत्बा जुमा 18 जनवरी 2013 ई.)

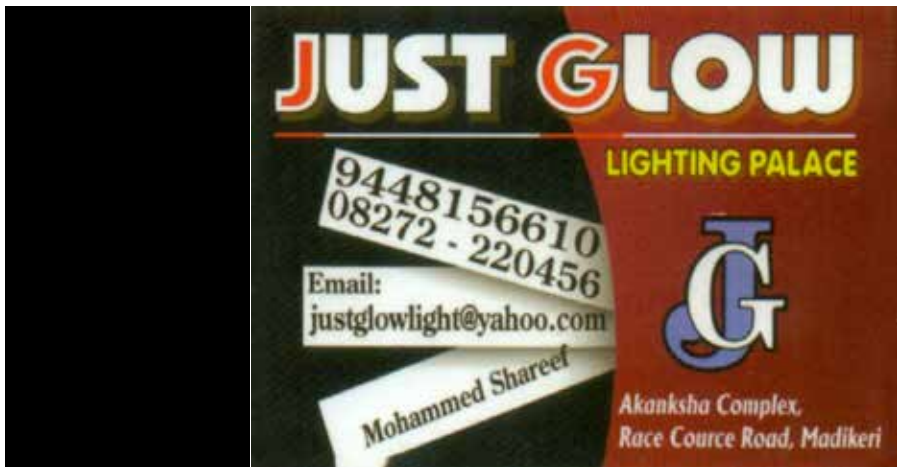

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का दौरा जर्मनी, अगस्त 2017 ई. (भाग -11)

☆ एक मेहमान ने कहा - यह जमाअत और इनके जलसे अन्य मुसलमानों के लिए नमूना हैं और ऐसी शांति प्रिय शिक्षा और ऐसी व्यवस्थित जमाअत इस योग्य है की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इस्लाम का प्रतिनिधित्व करे।

☆हमें हुज़ूर अनवर की विनम्रता बहुत अच्छी लगी और साथ ही आपका सामान्य लोगों के निकट होना। आपका गहराई में जाकर मामले के समस्त पहलुओं को समेटना और समस्त लोगों से बात करना और उनका मार्ग दर्शन करना ये समस्त बातें प्रशंसनीय हैं। खलीफतुल मसीह के सामीप्य से हमने मुहब्बत, अमन और सकून महसूस किया।

☆ जलसे में सम्मिलित मेहमानों की प्रतिक्रियाएं

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: फरहत अहमद आचार्य)

मेसेडोनिया के शहर बेरावो से आई हुई महमान बिलागुस्ता ट्रांचोस्काजो पेशे में वकील हैं उन्होंने अपने विचार इन शब्दों में व्यक्त किए: मैं इस जलसा में पहली बार सम्मिलित हुई हुसारे प्रबंध बहुत ज़बरदस्त थे और कोई कमी न थी। हुज़ूर अनवर के भाषण ने मुझे बहुत प्रभावित किया है और आपके भाषण से मुझे पता चला कि इस्लाम का वास्तविक अर्थ अमन है न कि युद्ध। वास्तव में इस्लाम लोगों को जीवन के महत्वपूर्ण और आधारभूत सिद्धांत सिखाता है कि किस प्रकार एक अच्छे वातावरण का निर्माण किया जा सकता है। इस्लाम हर हाल में चाहता है कि नेकी (अच्छाई) की जीत हो और बुरे हार जाए। अगर हम सब हुज़ूर अनवर के इन शब्दों का अनुसरण करें तो दुनिया युद्ध के बिना अमन एवं शांति हिंडोला बन जाएऔर असल में यही शिक्षा हर धर्म की आधारभूत शिक्षा है।

हुज़ूर अनवर ने अपने भाषण में फ़रमाया कि केवल बर्तन ही साफ़ नहीं होना चाहिए बल्कि वह खाना भी सेहतमंद हो जो उस बर्तन में मौजूद हो। मेरा विचार है कि हुज़ूर अनवर हमें समझाना चाहते हैं कि हमारे काम केवल काम न हों बल्कि अच्छे काम हों। इसी प्रकार हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि इस्लाम में मर्द औरत को बराबर के अधिकार प्राप्त हैं इससे पहले मैं समझती थी इस्लाम औरत को कोई अधिकार नहीं देता है जबकि मैंने हुज़ूर अनवर से यह सीखा कि औरत बच्चों की शिक्षा और प्रशिक्षण के मामले में ज़िम्मेदार है और उसकी इस मामले में अहम् भूमिका है। सारांश के तौर पर कहूँगी कि औरत घोंसले का ख्याल रखने वाली है और मर्द घोंसले की सुरक्षा करने वाला है मैं समझती हूँ कि पति परिवार का सर है और औरत गर्दन। दोनों एक दूसरे के बिना कायम नहीं रह सकते।

महोदया ने कहा कि इमाम जमाअत अहमदिया कि नमाज़ ने भी मुझ पर बहुत गहरा असर छोड़ा है, बैत ने भी गहरा असर छोड़ा है ऐसा अनुभव हो रहा था कि जैसे समय ठहर गया हो। हर दिशा में लोग ही लोग थे जो इन पलों से वंचित नहीं रहना चाहते थे समस्त मार्ग एक ही दिशा में लेकर जा रहे थे जहाँ इमाम जमाअत अहमदिया थे। उस समय जलसा गाह (पांडाल) के बाहर ऐसा था जैसे मरूस्थल हो। कोई भी बहार मौजूद न था मैंने जल्से के दौरान अपने इस्लाम संभंधि ज्ञान को बहुत बढ़ाया। हो सकता है कि शब्द तो मिट जाएँ लेकिन इस्लाम के अबरे में जो तस्वीर बन चुकी है यह हमेशा कायम रहेगी। हुज़ूर अनवर से जब भेंट हुई तो यह मेरे लिए पहला अवसर था कि आपको निकट से देखूं। इस भेंट ने जलसा सलाना की तक़रीर में रंग भर दिए, मुझे इस महान व्यक्ति से परिचय प्राप्त करने का अवसर मिला जिसके भाषण समस्त लोगों ने उन दिनों रूह की गहराइयों में डूब कर सुने। मुझ पर सबसे अधिक असर ख़लीफतुल मसीह के सादा अंदाज़ ने किया। उनके व्यवहार से ऐसे अनुभव होता था कि वे सामान्य लोगों के निकट होना चाहते हैं, उनसे घुलना मिलना चाहते हैं, मानो वे तमाम लोगों को यह पैगाम देना चाहते हैं की मुझे देखो मैं भी आप लोगों की भांति एक सामान्य इंसान हूँ मैं इस व्यक्तित्व को दोबारा भी देखना चाहती हूँ।

मेसेडोनिया के प्रतिनिधिमंडल में दो बहनें नताशा तराज कोविसका और ईरीना ताराज कोविसका भी सम्मिलित थीं, दोनों मनोविज्ञान की प्रोफ़ेसर हैं उन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि जलसा एक ऐसा अवसर था जिससे हमने बहुत कुछ सीखा जिसकी यादें हमेशा बाक़ी रहेंगी। हम पर हुज़ूर अनवर के व्यक्तित्व और आपके भाषण ने बहुत प्रभाव डाला। इंसान संतुष्ट हो जाता है इस अवसर पर हमने इस्लाम के बारे में बहुत कुछ सीखा। हम बहुत खुश हैं कि हमने इस महान व्यक्ति से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हमें हुज़ूर अनवर की विनम्रता बहुत अच्छी लगी और साथ ही आपका सामान्य लोगों के निकट होना। आपका गहराई में जाकर मामले के समस्त पहलुओं को समेटना और समस्त लोगों से बात करना और उनका मार्ग दर्शन करना ये समस्त बातें प्रशंसनीय हैं। खलीफतुल मसीह के सामीप्य से हमने मुहब्बत, अमन और सकून महसूस किया।

मेसेडोनिया से आए हुए एक महमान ई गोर तोशोसकी ने कहा- मैं इस प्रकार की मीटिंग में प्रथम बार सम्मिलित हुआ हूँ। हमारे आस पास मौजूद समस्त लोग मुहब्बत का इज़हार कर रहे थे। इस अनुभव से मेरे इस्लाम विषयक ज्ञान में बढ़ोतरी हुई, हुज़ूर अनवर के भाषण से बहुत प्रभावित हुआ हूँ, आपके शब्दों ने मेरी रूह को सकून प्रदान किया। विशेषकर इस बात से प्रभावित और हैरान हुआ जब हुज़ूर ने हाल में प्रवेश किया। जब हुज़ूर अनवर आते तो लोग नारे लगाते, हुज़ूर को सलाम करते। मैंने इन तीन दिनों में जो कुछ देखा है अपने परिचित जनों को बताऊंगा उनसे कहूँगा कि वे भी हैरान कर देने वाला दृश्य देखने जलसे पर आएं। हुज़ूर अनवर से मुलाकात ने मुझ पर बहुत अच्छा असर छोड़ा है कि जब हमने आपको हाल में देखा था तो ख्याल किया था की कोई आप तक नहीं पहुँच सकता जबकि मुलाकात के अवसर पर मैंने आपके हाथ को छुआ, आपसे हाथ मिलाया। अगर मुझे दोबारा अवसर मिला तो अवश्य आऊंगा।

एक महिला ने कहा कि हुज़ूर अनवर ने अपने लजना (औरतों) के भाषण में फ़रमाया था कि औरतें काम न किया करें। औरतों के क्या अधिकार हैं इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया- मैंने यह कहा है कि अपने बच्चों की तरबियत की खातिर बेहतर है कि काम न करें, बच्चों की तरबियत (प्रशिक्षण) करें और उनका ख्याल रखें। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फ़रमाया- मुझे ज्ञात है कि कुछ औरतों ने अपने बच्चों को सँभालने के लिए और उनकी तरबियत करने के लिए काम छोड़ दिए हैं और जब बच्चे बड़ी उम्र को पहुंच गए तो फिर दोबारा काम शुरू कर दिए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फ़रमाया- औरतों को चाहिए कि वे अपने कर्तव्य पूर्ण करें। अगर दो ऑप्शन हों तो देखें कि दोनों में से कौन सा बेहतर है और उसी को अपनाएं।

एक औरत ने कहा कि हुज़ूर ने अपने भाषण में कहा था कि मर्दों और औरतों को बराबर अधिकार दिए गए हैं, दोनों ही काम कर रहे हैं औरत अपने

काम करती है और मर्द अपना काम करते हैं हमें यह बहुत अच्छा लगा। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फ़रमाया की जमाअत की औरतें इस का पालन करती हैं। जो औरतें घर में रहने वाली हैं उनके बच्चे तरबियत की दृष्टि से अधिक बेहतर हैं उनकी बड़ी अच्छी परवरिश हो रही है और तरबियत हो रही है। अपने अपने दायरे में रह कर दोनों काम कर रहे हैं हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फ़रमाया- एक चीज़ आपने नहीं देखी जो छुपी हुई थी की जलसे में मर्द औरतों के लिए खाना पका रहे थे जबकि घरों में औरतें मर्दों के लिए खाना पकाती हैं।

मेसेडोनिया से आने वाली एक महिला महमान दांचे आज़मा नोवा टीवी की पत्रकार हैं, कहती हैं कि जलसे ने मेरी इस्लाम की नई दिशाओं की ओर रहनुमाई की है। कभी ऐसा समय भी था की मानो "इस्लाम" शब्द मुझ पर हराम था, अब मुझे इस्लाम का नया परिचय प्राप्त हुआ है मैं बतौर पत्रकार इस नए अनुभव के लिए आपकी धन्यवादी हूँ। ये प्रभाव मैं अपने साथ मेसेडोनिया लेकर जा रही हूँ। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ हमारी जो मुलाकात हुई उसने मुझे बहुत प्रभावित किया है, यह हमारे लिए नया अनुभव है यह मुलाकात हमेशा याद रहेगी। मुझे इस बात की बहुत ख़ुशी है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के दिलनशीं अंदाज़ ने बड़ा प्रभावित किया। यह हमारे लिए बहुत सौभाग्य की बात है की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ हमने फोटो खिंचवाए जो मेरे लिए यादगार हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला को देख कर इस्लाम की सच्चाई याद आती रहेगी कि इस्लाम को यदि समझाना हो तो उसे कुरआन करीम से सीधे तौर पर सीखना चाहिए। वास्तविक इस्लाम को रेडिकल इस्लाम के साथ नहीं मिलाना चाहिए। अंत में यह कहना चाहूंगी कि मैं हुज़ूर अनवर के समस्त उत्तरों से संतुष्ट थी। हुज़ूर का धन्यवाद भी अदा करना चाहूंगी कि हुज़ूर ने नई दिशाओं की ओर मेरा मार्गदर्शन किया नए आसमान की ओर मार्गदर्शन किया। हुज़ूर अनवर से ही इस्लाम की नई तस्वीर देखी।

Cele Ristekski साहिब मेसेडोनिया में टीवी के रिपोर्टर हैं। उन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि- मैं इस प्रकार की मीटिंग में प्रथम बार सम्मिलित हुआ हूँ यह सब मेरे लिए नया था मैंने मुसलमानों के बारे में बहुत कुछ सीखा है। जलसे पर काम करने वालों में बिलकुल भी थकान का अनुभव नहीं हो रहा था यह बात मेरे लिए बहुत आश्चर्य पूर्ण थी कि अधिक लोग एक स्थान पर थे और हर कोई अपना काम कर रहा था और किसी को कोई समस्या न थी। मुझे इस बात की ख़ुशी है कि मैं इन लोगों में मौजूद रहा उनमेंसे कुछ मेरे दोस्त बन जाएँगे और दोस्त तो दौलत होते हैं, इस जलसे के बाद में अपने आप को अमीर समझने लगा हूँ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से मुलाकात ने भी बहुत प्रभावित किया है। हुज़ूर अनवर हर सवाल का उत्तर देने के लिए हर समय तैयार हैं। उन्होंने ऐसे उत्तर दिए मानो उन्हें प्रश्नों का पहले से ज्ञान था। अंत में हमने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीरें खिंचवाईं। यह हर कोई नहीं करता यह भी इस बात का एक और सबूत है कि आप एक महान व्यक्तित्व के मालिक हैं।

मेसेडोनिया से आने वाली एक महमान Rodne Deolska जो कि टीवी की पत्रकार हैं वे कहती हैं जलसा मेरे लिए बतौर पत्रकार एक नया अनुभव है पत्रकारों के लिए वैश्विक तौर पर कोई कोई नई घटना या बात महत्वपूर्ण होती है मैं स्वयं को सौभाग्यशाली समझती हूँ कि मैंने यह जलसा स्वयं आकर देखा और इससे परिचय प्राप्त किया। जलसे के समस्त प्रबंधों ने मुझ पर विशेष प्रभाव डाला। इस जलसे से मैंने इस्लाम के बारे में कई बातें सीखी हैं। मैंने उन लोगों के इंटरव्यू लिए जिन्होंने इस्लाम स्वीकार किया है। जब मैं मेसेडोनिया वापस जाउंगी तो तो इस समस्त रिकार्डिंग से एक documentri बनाउंगी और यह पैगाम मेसेडोनियन कौम तक पहुंचाउंगी। कहने लगीं हुज़ूर अनवर का व्यक्तित्व बहुत प्रतिष्ठावान है। आप ऐसे व्यक्तित्व हैं जिनके पास हर प्रश्न का उत्तर है। आप हर प्रश्न का उत्तर बड़े धैर्य पूर्वक दे रहे थे यह बात इस बात का सबूत है कि आप सामान्य लोगों के कितने निकट हैं। मेरे पास यद्यपि बहुत से प्रश्न थे जो मैं हुज़ूर अनवर से करना चाहती थी लेकिन न कर सकी परन्तु स्वयं को सौभाग्यशाली समझती हूँ कि हुज़ूर अनवर के इतना निकट थी मुझे उम्मीद है की अगले साल फिर से आउंगी।

एक व्यक्ति ने मेराज के बारे में प्रश्न किया कि दूसरे मुसलामानों का अकीदा है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिस्मानी तौर पर आसमान पर गए थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फ़रमाया- हमारा अकीदा यह है कि मेराज रूहानी तौर पर एक नज़ारा था कानूने कुदरत के अनुसार कोई इंसान इस प्रकार जिस्मानी तौर पर आसमान पर नहीं जा सकता। इंसानी क़ानून लागू होता है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फ़रमाया- मेराज में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दूसरे आसमान पर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को देखा और दूसरे नबियों को भी देखा इसका मतलब तो बाकी नबी भी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की भांति जीवित हैं। वास्तविकता यही है कि मेराज की घटना एक रूहनी नज़ारा था।

मेसेडोनिया की एक सामाजिक संस्था में काम करने वाली तीन महिलाऐं नतालिया साहिबा, ओली कुक लेवा साहिबा और मारिजा साहिबा जलसे में सम्मिलित हुईं। इन महिलाओं ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा कि- हमारे आस पास वहां बहुत से मुसलमान रहते हैं परन्तु इस्लाम का यह चेहरा और ऐसा सामाजिक दृश्य हमारे लिए बिल्कुल अनुमान से परे सिद्ध हुआ। हमने आपके लोगों, आपकी शिक्षाओं और आपकी लीडरशिप को देखा है और हम इस एहसास के साथ वापस जाएँगे कि वहां के मुसलमानों को आपकी जमाअत का परिचय करवा सकें। यह जमाअत और इनके जलसे अन्य मुसलमानों के लिए नमूना हैं और ऐसी शांति प्रिय शिक्षा और ऐसी व्यवस्थित जमाअत इस योग्य है की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इस्लाम का प्रतिनिधित्व करे। इस बार तो हम किसी की दावत पर यहाँ आए हैं मगर हमें उम्मीद है कि आइन्दा हम मेहमानों को साथ लेकर आएँगे। और आपकी जमाअत का परिचय मेसेडोनिया के मुसलमानों को स्वयं जाकर करवाएँगे।

एक महमान महिला वासका जोलियोवा साहिबा ने अपने विचारों को व्यक्त करते हुए कहा- जलसे का प्रबंध बहुत उत्तम था आप लोगों की मेहमान नवाजी से मैं बहुत प्रभावित हुई हूँ। हमारी रहने की वयवस्था भी बहुत अच्छी थी इस जलसे में सम्मिलित होना मेरे लिए सौभाग्य की बात है हुज़ूर अनवर की ज्ञान से भरा हुआ भाषण, अमन का पैगाम और और हुज़ूर अनवर के विचार बहुत अच्छे हैं। आपने इस्लाम का जिस प्रकार हमें परिचय करवाया है वह बहुत अच्छा था और उन बातों ने मुझ पर गहरा असर छोड़ा है। महोदया ने कहा कि मुझे आज इस बात का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ है कि हम हुज़ूर अनवर के इतना निकट हैं। मैं हुज़ूर की विनम्रता, लोगों के साथ संबंध और वारतालाप की शैली से बहुत प्रभावित हुई हूँ, मैं आप का बहुत धन्यवाद करती हूँ कि आपने हमें यह अवसर प्रदान किया। अगर मुझे अवसर मिला तो दोबारा भी अवश्य आउंगी।

एक मेहमान अनीता गोंदरवा साहिबा ने अपने विचारों को व्यक्त करते हुए कहा- मैं जलसा का प्रबंध करने वाले समस्त लोगों का धन्यवाद करती हूँ और प्रसन्न हूँ कि पहली बार इस जलसा में सम्मिलित हुई। इस जलसा के बारे में मेरे विचार अत्यंत सकारत्मक हैं मुझे जमाअत अहमदिया की मेहमान नवाजी ने बहुत प्रभावित किया है हुज़ूर अनवर के भाषण भी बहुत पसंद आए। आपके पैगाम ने बहुत प्रभावित किया। आपका इंसानियत की भलाई के लिए पैगाम, आपका शान्तिमय अस्तित्व हर चीज़ पर बहुत गहरा असर डालने वाली थी। मुलाकात के बाद महोदया ने कहा- मैं हुज़ूर अनवर से मुलाकात के बाद बहुत अच्छे असर लेकर जा रही हूँ। खलीफा के आतंकवाद के बारे में अत्यंत स्पष्ट विचारों ने मुझे बहुत प्रभावित किया है। आपने औरत के मुकाम के बारे में जो इस्लामी शिक्षा बयान फरमाई और इस बारे में प्रश्नों के जिस प्रकार उत्तर दिए मैं इससे भी बहुत प्रभावित हूँ। मैं आपकी बहुत धन्यवादी हूँ।

एक महिला मेहमान मारिया तोदरवा साहिबा ने अपने विचारों को व्यक्त करते हुए कहा- मैं पहली बार इतने बड़े जलसे में सम्मिलित हुई हूँ। जलसे के समस्त प्रबंध बहुत अच्छे थे, जलसा का खाना बहुत अच्छा था, लोगों ने हमारी मेहमान नवाज़ी बहुत अच्छी की, हमारी बहुत खिदमत की, हर समय हमारा ख्याल रखा और हर कोई हर किसी की आवश्यकता पूरी करने के लिए तत्पर

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 8 March 2018 Issue No. 10

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 300/- Per Issue: Rs. 6/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

नज़र आ रहा था, इसके अलावा मैं समस्त भाषण देने वालों के भाषणों से बहुत प्रभावित हुई हूं मुसलमानों के बारे में कई बातों का ज्ञान हुआ जिन्होंने मुझ पर अच्छा प्रभाव डाला। मैं इन अनुभवों को मेसेडोनिया में अपने समस्त जानने वालों तक पहुंच आऊंगी मुझे अगर दोबारा आने का अवसर मिला तो मैं अवश्य जलसे में उपस्थित होंउंगी मुझे यह भी सौभाग्य प्राप्त हुआ कि मैं व्यक्तिगत तौर पर हुज़ूर अनवर से मिलूं। केवल इसी बात ने कि हुज़ूर ने हमें काफी समय दिया मैं बहुत प्रभावित हूं खलीफतुल मसीह ने हमारे समस्त प्रश्नों के जो कि धर्म और धर्म से जुड़े विभिन्न विषयों के बारे में थे, उनके बहुत स्पष्ट और सुंदर अंदाज़ में उत्तर दिए मेरे लिए बहुत बड़ा सौभाग्य था कि मैं एक अच्छे और सच्चे खलीफा की मेहमान बनी।

मैसेडोनिया के प्रतिनिधि मंडल की यह मुलाकात 7:10 तक जारी रही। प्रतिनिधि मंडल के समस्त मेंबरों ने एक एक करके हजूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला के साथ फोटो खिंचवाने का सौभाग्य प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर ने प्रेम पूर्वक बच्चों को चॉकलेट भी प्रदान कीं।

बुल्गारिया

इसके बाद बुल्गारिया से आने वाले प्रतिनिधिमंडल ने हुज़ूर अनवर से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। इस साल बुल्गारिया से 52 लोगों पर आधारित एक प्रतिनिधिमंडल जलसा सालाना जर्मनी में सम्मिलित हुआ। इसमें 20 अहमदी लोग थे जबकि 32 गैर अहमदी मेहमान थे। उनमें से 43 लोग बस के द्वारा 30 घंटे का सफर करके जर्मनी पहुंचे थे। बुल्गारिया के प्रतिनिधिमंडल में बिजनेसमैन, वकील, लेक्चरार, विद्यार्थी और सामान्य जीवन व्यतीत करने वाले लोग शामिल सम्मिलित थे।

बुल्गारिया से आई हुई एक मेहमान महिला एक Acenova ने कहा मैं पहली बार इस जलसा में सम्मिलित हुई हूं। बुल्गारिया के अहमदियों से जलसा के बारे में बहुत सुना था। वहां कई क़ौमों के लोग एक जगह एकत्रित थे, हर कोई एक दूसरे से सम्मान और प्रेम पूर्वक मिल रहा था। इंसान अगर अपनी जिंदगी बदलना चाहे तो जलसा पर आए। मैंने यहां बहुत कुछ सीखा है दो चीजों का वर्णन जरूर करना चाहती हूं एक तो यहां अल्लाह से मोहब्बत सिखाई जाती है, दूसरे- लोगों में एक दूसरे से मोहब्बत और इज्जत सिखाई जाती है।

बुल्गारिया प्रतिनिधिमंडल के एक मेहमान Pyifko Anev साहब कहते हैं- मैं पहली बार ऐसे बाबरकत जलसे में सम्मिलित हुआ हूं मैंने यहां यह सीखा है कि केवल अहमदी लोग ऐसे हैं जो वास्तव में अमन सिखाते हैं, इज्जत करते हैं और दुनिया को जन्नत बनाना चाहते हैं। यहाँ वास्तव में जिंदगी का प्रकाश मिलता है। ऐसा प्रकाश जो इंसान को जिंदगी प्रदान करता है। मैं तो अब सारी जिंदगी तमाम लोगों को बताऊंगा कि वास्तविक इस्लाम अहमियत है जो दुनिया में शांति की कोशिश कर रहे हैं, अपने लिए दुआ की दरखास्त करता हूं।

बुल्गारिया के प्रतिनिधिमंडल के एक मेहमान Pdemirov साहब कहते हैं- मुझे हुज़ूर के भाषण ने जिसमें इंसान से मोहब्बत का वर्णन था, बहुत प्रभावित किया। इसी तरह बच्चे जब पानी पिलाते थे और बहुत मोहब्बत से बोलते थे तो बहुत अच्छा लगता था। जिस क़ौम के बच्चे ऐसे हों उसका भविष्य सुरक्षित है।

बुल्गारिया के प्रतिनिधिमंडल में एक औरत जो कि आर्थोडॉक्स ईसाई हैं, वह भी सम्मिलित थीं। वह कहती हैं जलसा में शामिल होकर संतुष्टि और सुकून मिला है। शांति, मोहब्बत, एक दूसरे का सम्मान और अपनी कमजोरियों को दूर करने का जो अध्याय यहां से मिला है अल्लाह करे दुनिया के समस्त धर्म यहां से सीखें। अपने लिए दुआ की दरखास्त करती हैं।

बुल्गारिया के एक दोस्त मालिन साहब दूसरी बार अपने दोनों बेटों को लेकर जलसा में आए थे। उनके एक बेटे युसूफ साहब ने बताया कि मैं अब उर्दू सीख रहा हूं। मालिन साहब खुद वर्णन करते हैं कि मैं दूसरी बार जलसा में हाजिर हुआ हूं लेकिन अगर सौ साल भी जिंदा रहूं तो यही इच्छा है कि हर बार सम्मिलित हूं और सारी बरकतें जो इस जलसा में शामिल होने वालों के लिए हैं, हमें मिलती रहें। पिछले साल में अकेला आया था अब अपने दो बेटों को लेकर आया हूं हमने जो कुछ यहां देखा वह अकथनीय है। मैं अपने बच्चों को दिखाना चाहता था कि किस तरह एक दूसरे का सम्मान करते हैं और किस तरह दुनिया के विभिन्न कौमियतों के लोग मिल जुलकर प्यार और मोहब्बत के साथ एक जगह पर रह सकते हैं। मेरे बच्चों को भी यह जलसा और प्रबंध बहुत अच्छे लगे।

बुलगारिया से एक ईसाई महिला Desislaya साहिबा जो साइकोलोजी की लेक्चरार हैं, जलसे में सम्मिलित हुई। वह कहती हैं मैं पहली बार जलसे में शामिल हुई हूं। यह जलसा तो एक चमत्कार है। यहां मोहब्बत अमन सम्मान मिलता है। मैंने कोई झगड़ा नहीं देखा हर कोई एक दूसरे की सेवा कर रहा था, मुस्कुराते चेहरों से मिलते थे, मैं परहेज़ी खाना खाती हूं, हजारों लोगों में मुझे परहेज़ी खाना दिया जाता रहा, बीमार हुई तो तुरंत दवाइयां दी गईं। कोई VIP न था, सब बराबर थे। हुज़ूर अनवर के खुतबा जुमा ने बहुत प्रभावित किया। इंसान से मोहब्बत, क्षमा, एक दूसरे की सहायता करना, एक दूसरे के दोषों का प्रकटन दूसरों के सामने न करें बल्कि उसके लिए दुआ करें, आपने जो शिक्षाएं बयान फरमाईं, मैं सोचती रही कि काश आज सारा संसार आपकी आवाज़ सुने। अगर दुनिया सीधे रास्ते पर आना चाहती है तो उसे आपके व्यक्तित्व और आवाज़ की ओर आना होगा, आपकी शिक्षाओं को मानना होगा।

एक नौजवान ने अपनी अंगूठी हुज़ूर अनवर की सेवा में बरकत के लिए प्रस्तुत की। हुज़ूर अनवर ने प्रेमपूर्वक यह अंगूठी कुछ देर के लिए पहनी और फिर महोदय को वापस कर दी।

बुलगारिया के प्रतिनिधिमंडल के साथ यह मुलाकात 7:30 बजे तक जारी रही। अंत में प्रतिनिधिमंडल के तमाम मेम्बरों ने हुज़ूर के साथ फोटो खिंचवाने का सौभाग्य प्राप्त किया और हुज़ूर अनवर ने प्रतिनिधिमंडल में सम्मिलित बच्चों को चॉकलेट प्रदान कीं।

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad